चतुर्थ अध्याय

प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित परिवेश और समस्याएँ

4.1. प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित परिवेश और समस्याएँ

4.1.1. प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित आर्थिक परिवेश और समस्याएँ

4.1.2 प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक परिवेश और समस्याएँ

4.1.3. प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित धार्मिक परिवेश और समस्याएँ

4.1.4. प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित सांस्कृतिक परिवेश और समस्याएँ

4.1.5 प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित मनौवैज्ञानिक परिवेश और समस्याएँ

4.1.6.प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित राजनीतिक परिवेश और समस्याएँ

चतुर्थ अध्याय

प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित परिवेश और समस्याएँ

प्रस्तावना -

साहित्य जीवन की आलोचना है। साहित्य के पंकज का जन्म परिवेश के पंक में ही होता है। परिवेश के बिना साहित्य की कल्पना ही नहीं की जा सकती। साहित्यकार अपने परिवेश से प्रभावित होता हैं और साहित्य में जीवन और परिवेश के यथार्थ का चित्रण करता है। इस चित्रण की सशक्त अभिव्यक्ति में उपन्यास की सफलता मानी जाती है। इसी कारण उपन्यास में युग की संपूर्ण परिस्थितियाँ और समस्याएँ मुखरित हो जाती है। व्यक्ति न अच्छा होता है न बुरा, वह जो कुछ बनता बिगड़ता है उसका जिम्मेदार वातावरण ही है। पात्रों के चरित्र को यथार्थ और जीवंत रूप देने के लिए परिवेश की नितांत आवश्यकता होती है।

प्रत्येक रचना अपने देश, काल व समाज से प्रभावित होती है। अपने समय की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक विचारधाराओं के बीच से ही साहित्यकार की चेतना के विकास का स्फुरण होता है। साहित्यकार के निजी दृष्टिकोण को उस युग की परिस्थितियाँ और बदलती हुई सामाजिक चेतना बहुत दूर तक प्रभावित करती है। भविष्य उसमें आशा का संचार करता है। विषय के अनुसार तथा समाज के परिवेश के अनुसार रचनाकार अपनी रचनाओं में विभिन्न समस्याओं को चित्रित करता है।

इस अध्याय में हम परिवेश से प्रभावित उन समस्याओं को देखने वाले है जिन्होंने प्रभा खेतान को प्रभावित किया है।

4.1 प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित परिवेश और समस्याएँ -

उत्तर शती का हिंदी साहित्य नारी लेखन की संवेदना, दृढता, गहनता और विस्तृतता का साक्षी है। इस शती का प्रभा खेतान का समूचा साहित्य एक विद्रोहात्मक आक्रोश है। अपने साहित्य में उन्होंने समाज का यथार्थ चित्रण किया है। उन्होंने अपने जीवन के भोगे यथार्थ को सच्चाई के साथ व्यक्त किया है। बचपन से लेकर अंत तक घर, परिवार, समाज एवं व्यवसाय जगत में उन्होंने जो कुछ अनुभव किया उसी का चित्रण उनके साहित्य में है। उनके उपन्यास आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक

राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक परिवेश और उनसे जुड़ी समस्याओं को प्रस्तुत करते हैं। इनमें नारी जीवन की त्रासदी, घुटन, संत्रास एवं छटपटाहट व्यक्त हुई। वे रीति-रिवाज, परंपरा, अंधविश्वास, राजनीतिक क्षेत्र के दांवपेच, जातिवाद, वर्गसंघर्ष को प्रस्तुत करते है। सांस्कृतिक परिवेश के अतंर्गत भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति में पाया जानेवाला अंतर, भारतीय संस्कृति की महानता और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से उसमें आयी विकृतियों को अंकित किया गया है। मनोवैज्ञानिक परिवेश में प्रभा जी ने नारी अंतर्द्वंव्द को स्पष्ट किया है।

4.1.1 प्रभा खेतान के उपन्यासों में प्रतिबिंबित आर्थिक परिवेश और समस्याएँ -

'अर्थ' मनुष्य के जीवन का मूलाधार है। वह प्रारंभ से ही जीवन का विधायक तत्व रहा है। इस अर्थ के कारण समाज में अनेक वर्ग तैयार होते है। मनुष्य की आर्थिक स्थितियाँ ही समाज में विभिन्न श्रेणियों और संघर्षो के स्वरूप को निर्धारित करती है। वर्तमान युग में औद्योगिक विकास, भौतिक सुविधाओं के प्रति आकर्षण, पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव, सुविधा प्राप्ति की अति महत्वाकांक्षा आदि के कारण अर्थ प्राप्ति ही मनुष्य के जीवन का चरम लक्ष्य बना है। प्रभा खेतान भी अर्थ को महत्वपूर्ण मानती है पर उनके लिए अर्थ साधन है साध्य नहीं। उन्होंने आर्थिक समस्याओं के अंतर्गत-

1) विवाह की समस्या
2) दहेज की समस्या
3) परिवार विघटन
4) भ्रष्टाचार
5) लाचारी
6) आर्थिक विषमता

आदि का यथार्थ चित्रण किया है।

'आओ पेपे, घर चलें' में विदेश की भूमि पर उभरने वाला आर्थिक परिवेश एवं समस्याओं का यथार्थांकंन हुआ है। इसमें गरीबी से लाचार और बेबस प्रभा, ट्रेसी इरीना मरील और हेल्गा है। तो दूसरी ओर अपनी आर्थिक संपन्नता को प्रदर्शित करने

वाली क्लारा और पैसे को पानी की तरह बहाने वाली कैथी भी है। उपन्यास की नायिका प्रभा स्टुडेंट एक्सचेंज प्रोगाम के अतंर्गत अमरिका जाती है। रूपये का अवमूल्यन होने की वजह से डॉ. चोपडा प्रभा की सहायता करने में असमर्थता बताते हैं। ऐसे में बीस डॉलर से कैसे गुजारा होगा इस बात से चिंतित प्रभा की सहायता मिसेज डी करती है। आइलिन डॉ. चोपड़ा को लक्ष्य करते हुए कहती है, "बास्टर्ड इण्डियन! यह भी नहीं सोचा कि इतनी दूर से आई हुई अकेली लड़की के दिल पर क्या गुजरी होगी। पैसा-पैसा।"[1]

अमरिका की आर्थिक संपन्नता देखकर उपन्यास की नायिका प्रभा अपने आप को बहुत गरीब समझने लगती है। वह अपनी आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर खर्च करती है। धन के बिना समाज में जीवन व्यतीत करना कठीन है। धन प्राप्ति के लिए व्यक्ति सदा प्रयत्नशील रहता है। आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर रहने के लिए मनुष्य नौकरी करता है। प्रभा तो मारवाड़ी समाज में जन्मी है। अपने मारवाड़ी समाज की अर्थप्रियता अपने स्कूल की प्रधानाध्यापिका को बताते हुए प्रभा कहती है, "मैं उस समाज की हूँ जहाँ आदमी की एक ही विशेषता होती है- वह लाख रूपये का आदमी है या करोड़ का!"[2] अपने समाज में अपनी मर्जी से जीने के लिए धन अत्यंत आवश्यक है। इसके बारे में प्रभा तर्क करती है, "औरत की सारी स्वतंत्रता उसके पर्स में निहित है।"[3] वह अपनी जेब या पर्स को हमेशा नोटों से भरा होना अत्यावश्यक मानती है। समाज से लड़ने के लिए आर्थिक रूप से संपन्न और स्वतंत्र होना उन्हें बहुत जरूरी लगता है। अपने अस्तित्व प्राप्ति हेतु संघर्षशील मरील प्रभा को समझाती है कि अमरिका में किसी भी उद्योग व्यवसाय को प्रारंभ करने के लिए धन का अभाव नहीं है। केवल काम करने की तीव्र इच्छा और लगन होनी चाहिए। अमरिका जैसे धन संपन्न राष्ट्र में भी आर्थिक विषमता दिखाई देती है। अर्थाभाव की समस्या से जूझने के लिए सर्वहारा वर्ग की स्त्रियाँ मेहनत-मजदूरी करती है। हेल्थ क्लब में कार्य करनेवाली इरीना और ट्रेसी सर्वहारा वर्ग की है। वह करोड़पति और अरबपति स्त्रियों के नखरे देखती है। विदेश की धन संपन्नता से प्रभा और ट्रेसी आकर्षित होते है। अपने परिवार को सुख चैन प्रदान करने के लिए वहाँ आकर कार्य मग्न होते हैं। ट्रेसी अपनी आर्थिक

विवशता व्यक्त करती है, "क्या करें, प्रभा, हम जैसों को गरीब देश से इतने बड़े आदमियों के पैर रगड़ने आना पड़ता है। मैं भी घर की याद में रातों को रोती हूं। मेरा बूढ़ा बाप अब काम नहीं कर सकता। मैं चाहती हूं जल्दी से जल्दी पैसा कमाऊं ताकि डैड को यहाँ लाकर आराम से रख सकूं।"[4]

प्रभा मेहनत से धन कमाने में विश्वास रखती है वह अपना स्वाभिमान जिंदा रखती है। वह ग्रेटा गारबो द्वारा दिया पुरस्कार लेना भी पसंद नहीं करती। रूपये का अवमूल्यन होने के बाद भी वह अपना आत्मसम्मान नहीं खोती। वह न ही क्लारा ब्राउन के उतारे कपड़े पहनती है न ग्रेटा गारबो से टीप लेती है। वहाँ अपनी लगन एवं श्रद्धा से स्त्रियाँ पुरूष के कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है। समाज में अपने अस्तित्व को बनाए रखने का अवसर भी मिल रहा है। परिश्रम करने वालों के लिए अमरिका में पैसे की कमी नहीं है। अत: प्रभा भी हेल्गा के हॉटेल में काम कर अपना गुजारा करती है।

प्रभा भारत की आर्थिक समस्या बताती है। उसके पिता की हत्या उसके व्यापारी पार्टनर ने की थी। लेकिन धन के अभाव में उनके घरवाले कोर्ट में नहीं जाना चाहते। पिता की मृत्यु के चौदह वर्ष बाद भी घर की स्थिति सुधर नहीं पायी थी। प्रभा भी रूपये उधार लेकर विदेश आयी थी। वह भारत वापस लौटने का विचार हेल्गा को बताती है। भारत जैसे गरीब देश में धन का अभाव नहीं, मगर धन कमाने के साधनों का अभाव है। इस हेल्गा के बात की सत्यता से प्रभा भी सहमत थी। लेकिन कलकत्ता लौटकर वह अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती थी। प्रभा सोचती है, "आर्थिक स्वतंत्रता मेरी पहली जरूरत है।"[5]

अमरिका धन संपन्न देश होने के कारण यहाँ धनिकों के घर ऐश्वर्य वैभव से संपन्न होते हैं। प्रभा डॉक्टर ब्रैडले मूर के फ्लैट को देखकर आश्चर्यचकित हो गयी। यह फ्लैट 44 मंजिल पर था- "इतनी ऊँचाई पर यह फ्लैट है, या अमरावती? ड्रांईग रूम के बीचों बीच जापानी बगीचा। छोटा-सा टी हाऊस, फिर विक्टोरियन स्टाइल का ड्राइंग रूम का पसार, कांच की बड़ी-सी खिड़की पूरब को खुलती हुई, बाल्कनी के नीचे झांकने में डर लगे और सामने बह रही थी हडसन नदी।"[6]

डॉ. ब्रैडले मूर साइकियाट्रिस्ट है, कैथी उनकी पत्नी है। जो कमाती कुछ नहीं पर पैसे खर्च करने के लिए उसके पास समय की कमी है। वह साग-भाजी की तरह कपड़े खरीदती है। वह 40 हजार डॉलर का हीरे और नीलम का हार खरीदती है। उसके इस व्यवहार को देख प्रभा सोचती है, "तुम अमीर देश की, अमीर बाप की, अमीर आदमी की बीबी, तुम कैसे समझोगी कि यहाँ आकर कैसे हम लोगों को एक-एक डॉलर के लिए मोहताज होना पड़ता है।"[7] आज भी हमारे देश और समाज में धन का विशेष महत्व है। हमारा छोटे से छोटा काम भी धन के अभाव में संपन्न नहीं हो सकता।

'तालाबंदी' उपन्यास में कलकत्ता के अति धनाढय वर्ग का रहन-सहन तथा नई पीढ़ी का सुरा और सुंदरी में पानी की तरह पैसा बहाने का वर्णन है। घर का चौका चलाने के लिए एक लाख रूपये खर्च करना साधारण बात है। इस तरह इस उपन्यास में फैक्ट्री के मालिकों द्वारा पैसा खर्च करने का भी विवेचन है। हरिनारायण चट्टोपाध्याय श्याम बाबू को समझाते है, "अर्थ की व्यवस्था सारे मानवीय संबंधों को धुन की तरह खा जाती है।"[8] पीनू पैसे के लिए अपने ईमान को भी बेच देता है। समाज में अर्थ ही महत्वपूर्ण है। पर वह अनेक समस्याएँ पैदा करता है। इसलिए सुमित्रा अपने पति को पैसे की लालसा कम करने को कहती है। श्याम बाबू पत्नी को समझाते है, "धन अपने साथ कितना झमेला ले आता है। पर हम लोग भी महत्वाकांक्षाओं की सीढ़ियों पर कहां रूक पाते है।"[9]

आज पैसा न हो तो कोई भी काम नहीं होता। सभी पैसों के लिए पागल है। भ्रष्टाचार शिष्टाचार बन गया है। नैतिकता की बातें केवल किताबों में ही रह गई है। यही बात श्याम बाबू विक्रम को समझाते हैं। पैसे के पीछे दौड़ते हुए श्याम बाबू खुद अपने बेटे से दूर हो जाते हैं। बेटे का जन्मदिन मनाने के लिए भी उनके पास समय नहीं है। पाश्चात्य व्यापारी भी भारतीय मिल मालिकों का शोषण करते हैं। लेकिन श्याम बाबू अपनी बुद्धि के बल पर हाइनमैन को भी अपने सामने झुकाते है।

श्याम बाबू की माँ बेटा, पत्नी, बहन सभी अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए उनपर निर्भर है। उनकी इच्छाओं के जंजाल में श्याम बाबू फँसते जाते है। साथ ही

इस उपन्यास में शेखरबाबू के माध्यम से बंगाली समाज की विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला गया है। बंगाली समाज के लोग बेहद ईमानदार होते हैं। वे कभी लालच में आकर किसी से धोखा नहीं करते। धोखा न देना उनके स्वभाव की नेकनीयती होती है।

किसी भी देश का संपूर्ण सामाजिक एवं राजनीतिक ढाँचा वहाँ की आर्थिक व्यवस्था पर निर्भर करता है। आर्थिक स्थिति ही मनुष्य के भौतिक और सामाजिक परिवेश को सिद्ध करती है। 'अग्निसंभवा' में प्रभा खेतान ने चीन में मजदूरों की आर्थिक स्थिति का विवेचन किया है। आइवी एक फैक्ट्री में कमीजों की सिलाई करती है। वहाँ लगभग पाँच सौ औरतें काम करती है। वहाँ पर होनेवाला मजदूरों का आर्थिक शोषण, भ्रष्टाचार, घूसखोरी और राष्ट्र विरोधी कार्य को देखकर व्यथित आइवी हांगकांग चली आती है। वहाँ पर नागरिकता हासिल करने के लिए उसे पैसों की आवश्यकता पड़ती है। उसे अपनी गाड़ी में पड़ा हुआ प्रभा का पर्स मिलता है। वह ईमानदारी से उसे प्रभा को लौटा देती है। जब डिक्रे उसे पैसे देने लगते हैं तब स्वाभिमान के साथ उन्हें मना कर देती है।

किसी भी देश की संपन्नता का द्योतक वहाँ की आर्थिक स्थिति होती है। समाज की सुख शांति देश की अर्थव्यवस्था पर निर्भर करती है। आर्थिक विषमता असंतोष को जन्म देती है। प्रभा व्यवसाय के सिलसिले में चीन आती है। वह सोच-समझकर पूरी सूझबूझ से अपनी इच्छाओं को दबाकर पैसे खर्च करती है। आइवी और प्रभा एक प्रदर्शनी देखने जाते हैं। वहाँ प्रभा से आइवी कहती है, "वह तुर्की क्यों तुम हिंदुस्तानियों को अपना माल दिखाने लगा, तुम कोई खरीददार तो हो नहीं...। व्यापार के लिए दस मिनट मेरी नौकरानी बन भी जाती तो क्या बिगड़ जाता? तुम तो जैकी डिक्रे के तलवे हर समय सहलाती हो।"[10] इस तरह प्रभा को अपमान सहना पड़ता है।

चीन में व्यापार हेतु आने पर वह मीरामार इस सस्ते हॉटेल में ठहरना चाहती थी, पर शिव के कहने पर नाथन रोड पर ठहरती तो है पर पैसों की चिंता से उसे नींद नहीं आती। आइवी हांगकांग के व्यापारियों के बारे में कहती है, "हांगकांग के

व्यापारियों में मनुष्यता नहीं है वे खाली पैसा समझते है, पैसे के लिए रात-दिन दौड़ते रहना, बेचारे टूरिस्ट लोगों को कितनी परेशानी हुई।"[11]

व्यापार के उसूल के बारे में प्रभा को आइवी समझाती है। व्यापार की दुनिया में तुम नई नहीं हो। यहाँ झूठ सच कुछ नहीं होता। प्रोफिट का अर्थ हुआ एक दूसरे की अज्ञानता का फायदा उठाना।

'एडस' उपन्यास में व्यापार के सिलसिले में प्रभा का पाश्चात्य देश में आना जाना लगा रहता है तब विदेशी मुद्रा और खर्च के बारे में सोचकर प्रभा परेशान होती है। व्यापार में आयी मंदी की वजह से वह फिजूल खर्ची नहीं करती। वह कुक्कू को बता भी नहीं पाती, "मैं अपने देश में अमीर हूँ पर यहाँ बहुत गरीब। कल से आजतक ढ़ाई सौ डालर खर्च हो गये है, जिसमें अभी हॉटेल का बिल नहीं चुकाया है। कह नहीं पाती कि कुक्कू मुझे डालर इसलिए नहीं दिया जाता कि मैं इतिहास के पन्ने पलटूं। हमारे बीच वर्तमान सांप की तरह कुंडली मारे बैठा है।"[12] इस तरह यहाँ पर प्रभा की आर्थिक बेबसी दिखाई देती है।

आर्थिक रूप से दूसरे पर आश्रित होना बहुत बुरी बात है। कुक्कू भी आर्थिक मामले में श्वार्ज पर आश्रित है। वह प्रभा के समक्ष अपनी आर्थिक लाचारी जाहिर करती है। हैम्प जब प्रभा को हॉटेल में खाने पर आमंत्रित करता है तब एक समय के तीन हजार रूपये खर्च होने पर प्रभा चिंतित होती है। उसके समक्ष व्यावसायिक आर्थिक संकट है। अमरिका और ईरान का युद्ध होने पर भयंकर आर्थिक समस्या उपस्थित होगी यह परेशानी प्रभा को सताती है। "बहस! हर जगह बहस हो रही थी। हर फोरम में चेंबर आफ कामर्स में व्यापारियों के बीच। युद्ध छिड़ते बैरल के दाम साठ डालर हो जायेंगे। कैसे देश का चक्का चलेगा? विदेशी मुद्रा का अभाव। मगर माल बेचें तो कहां बेचें?"[13] श्वेत लोगों द्वारा अविकसित राष्ट्रों का होने वाला आर्थिक शोषण भी प्रभा जी ने इस उपन्यास में चित्रित किया है।

'छिन्नमस्ता' उपन्यास में व्यापार में कामयाबी प्राप्त करने के लिए जरूरत के अनुसार पैसे का नियोजन करना चाहिए यह व्यावहारिक दृष्टिकोण उपन्यास की नायिका प्रिया में है। प्रिया का व्यावसायिक जगत में पैर फैलाना नरेंद्र को अखरता है।

दोनों के दांपत्य जीवन में अर्थ और व्यवसाय के कारण दरारें पड़ने लगती है। नरेंद्र को शॉपिंग करना अच्छा लगता था परंतु प्रिया को इसमें बिलकुल भी रूचि नहीं थी। प्रिया नरेंद्र से कहती है, "धन? नरेंद्र का धन? खरीदो, बेचो, रूपये का ब्याज और ब्याज के ऊपर ब्याज। एनफ। बहुत हो चुका, उसका जो मन चाहे करे, पर मुझे छोड़ दे।"[14]

संपन्न परिवार की बहू होने के बावजूद प्रिया अपने मन के मुताबिक किसी को कुछ दे नहीं पाती। जब वह किसी को कुछ देती तो उसे नौकरों के सामने अपमानित होना पड़ता। प्रिया की सास ढेरों चीजे खरीदती और इस्तेमाल करती। अपनी आर्थिक संपन्नता का प्रदर्शन करने की उसकी प्रवृत्ति है। वह प्रिया से भी इन बातों की अपेक्षा रखती है। इस घुटन भरी जिंदगी में अपने अस्तित्व को खोजते हुए प्रिया का मन चीत्कार कर उठता, "पैसा---पैसा---पैसा---जन्म से आज तक वैभव के बीच। हाथ में कभी कुछ नहीं रहा और ससुराल --- यहाँ छप्पनभोग परोसकर आप भूखे बैठै रहिए। इनका स्थायी ढाँचा है। खर्च करने के बँधे-बँधाए तरीके हैं। आत्मग्रस्तता की सीमा से परे --- ये लोग कितने ग्रस्त हैं पैसे से? मेरी सासूजी की आलमारी में लाखों का सामान है, पर गिनकर सम्हालकर देना।"[15] उपन्यास की पात्र नीना अपनी नाजायज संतान के भार से दबे दु:खपूर्ण जीवन से निजात पाकर सुख को अर्जित करना चाहती है। वह आर्थिक रूप से संपन्न होकर अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है। क्योंकि वह जानती है, "अपने पैरों पर खड़ी स्त्री का कोई निरादर नहीं कर सकता।"[16]

कस्तुरी के पति याने प्रिया के पिता की मृत्यु के पश्चात कस्तुरी घर परिवार को ठीक तरह से सँभालती है। वह कोर्ट कचहरी में पैसे खर्च करना फिजूल मानती है। वह पहले जैसा तामझाम रखने का प्रयास करती है। अपनी जरूरतों को कम कर फटा हुआ कपड़ा थिगली लगाकर पहनती है। लेकिन बच्चों को किसी बात की कमी न हो इस बात का ध्यान रखती है। फिर सल्लो जीजी के नवजात शिशु के आगमन पर दिया जानेवाला नेग का खर्चा कैसे होगा इस बात से परेशान होती है।

व्यावसायिक सफलता प्राप्त करने के बाद प्रिया समाधानी होकर अपने मन के मुताबिक नीना की शादी में खर्च कर अपने सारे अरमान पूरे करती है। नरेंद्र और

अपने रिश्ते को वह मालिक और गुलाम का नाम देती है। अंत में अपनी प्रगति के लिए उससे अलग होना ही पसंद करती है।

इस तरह 'छिन्नमस्ता' में आर्थिक परिवेश से उत्पन्न समस्याएँ पति-पत्नी को तलाक के कगार पर खड़ी कर देती हैं। "विवाह पति बच्चे इन सब से हटकर भी नारी का अपना एक अस्तित्व है। उसकी दुनिया केवल पुरूष तक ही सीमित होकर नहीं रहती, उसकी अपनी भी एक अलग दुनिया है, अपनी अलग पहचान है।"[17] यही बात 'छिन्नमस्ता' उपन्यास की नायिका प्रिया साबित करती है।

परिवार चलाने हेतु धन की आवश्यकता होती है। धन के सिवा परिवार का खर्च चलाया नहीं जा सकता। लेकिन गृह कार्य करनेवाली और बाहर जाकर नौकरी न करनेवाली स्त्री को घर में बेकार समझा जाता है। 'अपने-अपने चेहरे' की मिसेज गोयनका अपने पति से घर के खर्च के लिए पैसे माँगती है तो दोनों में झगड़ा होता है। मिस्टर गोयनका उसे कहते है, "तुम्हारा दिमाग खराब हुआ है क्या? मेरा दिवाला पिटवाओगी? अभी तो शादी में अनाप-शनाप खर्चा हुआ है।"[18]

'पीली आंधी' उपन्यास में मारवाड़ी समाज के युवकों को रोजगार के लिए घर छोड़कर बाहर जाना पड़ता है। अर्थ प्राप्ति के लिए वे संघर्ष करते है। गाँव में उनका परिवार उपेक्षित और चिंतित जीवन-यापन करता है। पहले जमाने में रूंगटा परिवार आर्थिक रूप से संपन्न था। कंपनी सरकार के कारण उनका कारोबार बंद हो गया। अब रूंगटा परिवार का वैभव नहीं रहा अत: उनके पोतों को दिसावरी जाना पड़ा था।

किशन कहता है, "वहाँ गरीबी है । भुखमरी है, राजा-रजवाडों की झूठी शान-शौकत है। कंपनी सरकार की चालबाजियाँ है । वहाँ कुछ भी सुरक्षित नहीं। ब्राम्हण संस्कृत भूलने लगा है। राजा प्रजा की रक्षा नहीं करता ।"[19] किशन को व्यवसाय हेतु पत्नी के गहने बेचने पड़ते है जिससे उसका मन उसे धिक्कारता है । किशन बाबू और राधाबाई रूपयों के लालच में अपने बेटे माधों की शादी एक काली, बदसूरत, रोगली, दस साल की बालिका से कर देते हैं, माधव की पत्नी को मिरगी के दौरे पड़ते है तब माधव मिसरानी रखने की बात करता है । लेकिन खर्चे की वजह से राधाबाई माधो की चाची इन्कार कर देती है । एक दिन दुर्घटना में माधो की पत्नी

की मृत्यु हो जाती है । बाद में माधो की शादी पद्मावती से होती है । पद्मावती की इस शादी के बारे में डॉ. वैशाली देशपांडे लिखती है, "पद्मावती एक स्वस्थ एवं सुंदर लड़की होने के बावजूद पिता की आर्थिक दुरावस्था के कारण अनमेल विवाह की शिकार होती है।"[20] कन्या के विवाह के लिए यदि अच्छा वर चाहिए तो दहेज में धन भी उसी प्रकार देना पड़ता है । इसलिए म्हालीराम चिंतित है । व्यापार और व्यवसाय जगत में भ्रष्टाचार के बिना उन्नति नहीं होती । यही बात माधव बाबू पन्नालाल को समझाते हुए कहते है कि विल्किसन साहब को पटाना ही होगा क्योंकि कोयला काटने का जितना ऑर्डर होता है । हम उससे ज्यादा काटते हैं और बिना इसके तो काम चलने से रहा। विवाह आर्थिक समस्या को उत्पन्न करनेवाला महत्वपूर्ण कारण है। सोमा के विवाह के अवसर पर अग्रवाल जी का बाईस लाख रूपया खर्च होता है। संपन्न परिवारों में विवाह के अवसर पर खूब खर्च होता है। धन संपन्न परिवारों में आर्थिक कारणों से पारस्पारिक मनमुटाव भी उत्पन्न होता है।

'स्त्री-पक्ष' की उषा महाजन का आर्थिक शोषण उसके पति द्वारा किया जाता है। पति को हुए आर्थिक नुकसान हेतु वह अपने गहने बेच देती है। पर वह दोबारा सट्टे में हार जाता है। तब वह नौकरी कर अपने पति का कर्ज चुकाती है।

मध्य वर्ग के परिवारों में घर चलाने हेतु पति-पत्नी दोनों को नौकरी करनी पड़ती है। सुमित की इंटरशिप में उसे पंद्रह सौ रूपये मिलते है। जिसमें घर खर्च चलाना मुश्किल है इसलिए वृंदा डॉक्टर के चेंबर में टाइपिस्ट की नौकरी करती है तथा घर खर्च बड़ी सावधानी से चलाती है। वृंदा के गर्भवती होने पर उसे नौकरी से त्यागपत्र देना पड़ता है। अपनी आर्थिक स्थिति को देखकर सुमित उसे गर्भपात कराने को कहता है।

वृंदा का पति जब उसे तलाक देने का निश्चय सुनाता है तब वह स्त्री का स्वाभिमान, अस्मिता, अस्तित्व एवं परिस्थितियों से संघर्ष करती है। वह अपने तलाकशुदा पति से आर्थिक अधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्ष करती है क्योंकि उसके और बच्चों के भविष्य का प्रश्न इससे जुड़ा हुआ है। वह वकील साहब से कहती है, "मुझे पैसे मिलने चाहिए, मैंने काम किया है, घर बनाने में मेहनत की है,

सुमित ने रूपये मेरी सहायता से कमाये थे। इन रूपयों पर मेरा भी अधिकार होना चाहिए। भविष्य में घर चलाने और बच्चों की पढ़ाई-लिखाई पर जो खर्च होगा वह अलग से देना होना। नहीं तो सुमित ले जायें अपने बच्चों को।"[21]

डॉ.अशोक मराठे स्त्री सशक्तिकरण के लिए स्त्री का आर्थिक स्वावलंबन बहुत जरूरी समझते है। वे कहते हैं, "स्त्री अगर आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी रही तो उस पर जुल्म नहीं होंगे। यदि हुए भी तो कम मात्रा में होंगे। स्वावलंबी होने से औरत का स्वाभिमान और आत्मसन्मान बढ़ता है। साथ ही वह प्रतिकूल परिस्थितियों और प्रतिबंधों को नकारने की क्षमता हासिल करती है। वह समाज की संकीर्ण परंपराओं से मुक्ति पा सकता है।"[22] वृंदा भी सुमित से तलाक लेने के पश्चात अपना बुटीक खोलकर आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी जीवन जीती है।

निष्कर्ष-

आर्थिक स्थिति के साथ जीवन में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। पर लेखिका के विचार में अर्थ जीवन का साध्य नहीं साधन मात्र है। प्रभा खेतान के उपन्यासों के पात्र आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने हेतु तथा अपने अस्तित्व की पहचान बनाने के लिए युद्ध स्तर पर क्रियाशील दिखाई देते हैं। चाहे वह प्रिया, आइवी, रमा, प्रभा या श्याम बाबू हो। 'आओ पेपे, घर चलें' की प्रभा अपने आस्तित्व की स्थापना के लिए एवं आर्थिक स्वावलंबन के लिए कई मुसीबतों और विसंगतियों का सामना करती है। लेखिका ने अपने उपन्यासों के कथ्यों द्वारा यह स्पष्ट किया है कि-आर्थिक परिवेश के कारण दहेज की समस्या, विवाह की समस्या, पारिवारिक संबंधों का टूटना एवं भ्रष्टाचार आदि अनेक समस्याएँ निर्माण हुई है।

4.1.2 प्रभा खेतान के उपन्यासों में प्रतिबिंबित सामाजिक परिवेश और समस्याएँ -

सामाजिक परिवेश के अंतर्गत प्रभा खेतान ने

1. मारवाड़ी समाज का यथार्थ
2. भारतीय एवं विदेशी समाज की समस्याएँ
3. टूटते परिवार एवं पति-पत्नी संबंध
4. बेटी के जन्म को बोझ मानना

5. नारी के अस्तित्व की लड़ाई

6. नारी का सशक्तिकरण

7. स्वार्थ

8. दहेज की समस्या

9. नारी शोषण, अन्याय एवं अत्याचार

10. विवाह संस्कार और विवाहेत्तर संबंध

11. अनमेल विवाह

12. संयुक्त परिवार का दर्द

13. नारी सुरक्षा की समस्या

आदि समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है।

प्रभा खेतान के उपन्यास साहित्य में मारवाड़ी समाज के बनते-बिगड़ते समाज जीवन का बड़ा ही सजीव चित्रण देखने को मिलता है। साथ ही मारवाड़ी समाज में आनेवाले परिवर्तनों से उत्पन्न संघर्ष और पीड़ा का चित्रण भी प्राप्त होता है।

प्रभा जी के साहित्य में संपन्न मारवाड़ी समाज में होनेवाली परंपराओं का सजीव वर्णन पाया जाता है। उनके उपन्यासों के बारे में डॉ.उषाकीर्ति राणावत लिखती है-''राजनीति यदि प्रभा जी के साहित्य का प्रमाण भर है तो सामाजिक परिवेश उनके कथा संसार का प्रमुख नियामक है। समाज में ये स्थितियाँ न होती तो ये उपन्यास न लिखे जाते या लिखे जाते तो ऐसे न होते''[23]

भारतीय समाज पंरपरावादी रहा है, उसके अपने सांस्कृतिक, नैतिक मूल्य रहे हैं। प्रभा खेतान के 'आओ पेपे, घर चलें' की नायिका प्रभा के परिवार एवं समाज में परंपरागत मूल्यों के पालन के प्रति आग्रह है। वहाँ के समाज में स्त्रियों का होंठ या नाखून रंगाना अच्छा नहीं माना जाता था। पहली बार लिपस्टिक लगाने पर प्रभा की माँ उसपर गुस्सा होती है। ऐसे समाज एवं परिवार की प्रभा ब्यूटी थेरापी कोर्स अमरिका जाकर पूरा करती है। पर उसे चिंता है कि भारत में ब्युटी क्लिनीक खोलने पर समाज उसे किस नजर से देखेगा?

परिवार विघटन की प्रबल समस्या को लेकर प्रभा खेतान ने भारतीय तथा पाश्चात्य समाज में टूटते बिखरतें परिवारों के विविध रूपों के दर्शन कराये है। 'आओ पेपे, घर चलें' की मरील, मिसेज डी तथा हेल्गा इसी समस्या से पीड़ित है। पति की बेवफाई, अपनी इलिट सोसायटी, काम और बॉयफ्रेंड से फुरसत न पानेवाली मरील अपनी बेटियों को प्यार नहीं दे पाती। मरील का बर्ताव उसकी बेटियों नैन्सी और लारा को अपनी अलग दुनिया बसाने को मजबूर कर देता है। मिसेज डी. के पति डॉ. डी. भी क्लारा ब्राऊन के प्यार के चंगुल में फँस जाते हैं। फल स्वरूप मिसेज डी. के जीवन में 'पति-पत्नी और वह' का त्रिकोण तैयार हो जाता है। मिसेज डी. डॉ. डी. का प्यार न मिलने की वजह से परेशान है। वह पति को तबाह कर सकती थी पर प्यार पाने की चाह में ऐसा नहीं कर पाती। पाश्चात्य नारी होने के बावजूद एलिजा भारतीय नारी की तरह पति को पूजती है।

आइलिन दो पति और पाँच प्रेमियों के बावजूद खुद को अकेला ही महसूस करती है और पेपे के साथ जिंदगी गुजारती है। भारतीय समाज में पाई जानेवाली माया, ममता, वात्सल्य पाश्चात्य समाज की आइलिन में भी पाई जाती है। वह अपने बेटे की मौत से दु:खी होती है। वह रोने-धोने में विश्वास नहीं करती। लेकिन इस उपन्यास की हेल्गा अपने देश की खातिर अपना परिवार दांव पर लगाती है। यहाँ माँ और पुत्री में वैचारिक भिन्नता है। हेल्गा अपने पति और बच्चों से प्यार नहीं करती। वह अपने अस्तित्व के लिए अपना सबकुछ त्यागने को तैयार हो जाती है। अमरिका जैसे धन संपन्न देश में पैसा ही सबकुछ है। सभी रिश्ते-नाते पैसों की वजह से बनते-बिगड़ते है। कैथी का पति ब्रैंडी अपनी पहली पत्नी को पैसे देकर तलाक लेता है। वह कैथी से दूसरी शादी करता है।

विदेशों में स्त्रियाँ अपने आप को आकर्षक, मोहक एवं युवा रखने के लिए हर संभव प्रयास करती है। लेकिन भारत में ऐसा करना गलत माना जाता है। प्रभा जब कैथी के कहने पर बाल कटवाती है तब वह खुद भी परेशान हो जाती है।

'तालाबंदी' उपन्यास में भारतीय परंपरा की पत्नी का रूप वर्णित है । सुमित्रा अपने पति को देवता मानती है । हर मुश्किल में पति का साथ निभाकर उसे खुश

रखने का प्रयास करती है । पति की सेहत का खयाल करते हुए कभी पति को डाँटती भी है । खुद की इच्छाओं को कम करके पति को कम संपत्ति कमाने की सलाह देती है । श्याम बाबू की माँ अपने बेटे की खुशी, सुरक्षा और तरक्की के लिए भगवान की मिन्नतें करती है । श्याम बाबू और उनकी पत्नी में पारस्पारिक स्नेह है । पर अपने काम की वजह से श्याम बाबू व्यस्त रहते हैं। अपनी पत्नी को वह खुशी नहीं दे पाते।

'अग्निसंभवा' इस उपन्यास में पाश्चात्य समाज में भी नारी की स्थिति दयनीय ही है, यह बताया गया है। आइवी का पति नशे में चूर रहकर पत्नी को मारता पीटता । आइवी बताती है, "मेरा पति और खूंखार हो गया था । दिन भर माओ की निंदा करना और रात को शराब के नशे में मुझे पीट़ना ।"[24] पाश्चात्यों में भी लड़की का जन्म बोझ माना जाता है। चीन में लड़की को पैदा होते ही मार डाला जाता है।

पाश्चात्य समाज का पारिवारिक जीवन अत्यंत कष्टमय है। अपना गुजारा करने के लिए आइवी दिन-रात फैक्ट्री में कपड़े सिलाने का काम करती है। उसे मुश्किल से चालीस-पचास हांगकांग डालर मिलते है। आइवी का अपने बेटे वॉग के लिए चिंतित होना मातृत्व प्रेम उजागर करता है। उसकी मृत्यु का दर्द वह प्रभा के सामने व्यक्त करती है।

औरत को अपना अस्तित्व प्राप्त करने के लिए बहुत-सी मुश्किलें झेलनी पड़ती है। प्रभा कहती है, "औरतपने का हीनभाव, पुरूषों की दुनिया में बार-बार अपना औचित्य स्थापित करना चाहता रहा है। क्या मैं औरत हूँ इसलिए यह काम नहीं करूंगी? करके भी दिखा दूँगी। दिखाया। पर देखा भी कम नहीं।"[25]

नारी को इस समाज में सशक्त बनकर खुद की हिफाजत खुद करनी होगी। आइवी नारी के सामर्थ्य के बारे में कहती है, "नहीं, यदि औरत अपने को नीचे न गिराये तो दुनिया में किसी की हिम्मत नहीं कि उसके कंधों पर हाथ रख दे।"[26]

'एड्स' उपन्यास में व्यक्ति की व्यक्तिगत बीमारी समाज की प्रमुख समस्या बन गई है। बुरा स्वास्थ्य या कोई लाईलाज बीमारी के कारण भी अच्छे खासे परिवार में विघटन की स्थिति निर्माण हो जाती है। एक परिवार विघटित हो जाता है। एनडू की

पत्नी सोफिया को 'एड्स' हो जाता है। इसकी वजह से एण्डू के जीवन में घुटन, रिक्तता, शून्यता और विवशता भर जाती है। उसके मन का खालीपन उसे तिल-तिल जलाता है। बचपन से लेकर बुढ़ापे तक नारी पर बंधन लगाये जाते है। प्रभा कहती है, पास बैठे इस पुरूष से मुझे जलन हो रही है । पुरूष है, अकेला रह सकता है। आज भी औरतें अपनी औरतपन की बेड़ियों में जकड़ी हुई है।

भारतीय एवं पाश्चात्य नारियों को अपने पति के प्रेम की चाह होती है। कुक्कू की भी यही इच्छा है । वह श्वार्ज का प्यार चाहती है। साथ ही पेट्रा हैम्प के चिपकू स्वभाव से परेशान है। पति का उसके पीछे-पीछे घूमना उसे पसंद नहीं है।

'छिन्नमस्ता' उपन्यास में परंपरावादी समाज का चित्रण किया गया है। स्त्री के जीवन में घर संसार एवं परिवार की ही प्राथमिकता हो यह समाज की अपेक्षा होती है। जब प्रिया व्यवसायिक सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ती हुई नारी धर्म और संस्कारों को परे हटाती है तब उसे समाज के विरोध का सामना करना पड़ता है। इतना ही नहीं पत्नी का आर्थिक रूप से संपन्न और स्वतंत्र होकर पति की तुलना में उपर उठना भी परिवार विघटन का कारण बनता है। डॉ.अशोक मराठे जी भी प्रिया और नरेंद्र के रिश्ते के बारे में कहते है-''छिन्नमस्ता' की प्रिया का आर्थिक रूप में स्वतंत्र होना तथा हर समय व्यापार के सिलसिले में देश-विदेश की यात्रा करना, हमेशा सैम्पल लेकर व्यापारियों के साथ अधिक से अधिक समय बिताना आदि से पति नरेंद्र के मन में प्रिया के प्रति घृणा तथा नफरत की भावना तैयार कर देता है''[27]

समाज में आपसी संबंध औपचारिक रूप से निभाये जाते है। ये संबंध केवल व्यवहार हेतु खोखले एवं दिखावे के होते है। न चाहते हुए भी प्रिया को पत्नी धर्म निभाने हेतु इन पार्टियों, उत्सवों में सहभाग लेना पड़ता है। पाश्चात्य समाज की भोगवादी वृत्ति को भारतीय समाज में घृणित माना गया है। नरेंद्र और प्रिया अमरिका जाने पर नरेंद्र उसे न चाहते हुए भी ब्लू फिल्म दिखाने ले जाता है । प्रिया की माँ कस्तुरी अपने पति की मृत्यु के पश्चात सहनशीलता और शक्ति से अपने परिवार पर आई मुसीबतों का सामना करती है।

परिवार में जन्मी पाँचवी संतान से परिवार वाले नाराज होते है। प्रिया माँ के उपेक्षा की पात्र होती है। दाई माँ ही उसका पालन-पोषण करती है। सुंदर न होने की वजह से उसे माँ और अन्य लोगों के ताने सहने पड़ते है। संयुक्त परिवारों में स्नेह से ज्यादा स्वार्थ होता है। बड़े छोटों का शोषण करते है। बचपन में प्रिया के बीमार होने पर डॉक्टर नहीं बुलाया जाता था। लेकिन भैय्या या सरोज के लिए महंगे से महँगा डॉक्टर बुलाया जाता था।

दहेज के विकृत रूप के बारे में धर्मपाल जी का मानना है, ''आज दहेज का बीभत्स रूप समाज में व्याप्त हो गया है। 'मांग' अथवा 'याचना' अथवा 'भिक्षा' शब्द दहेज के पर्याय बन चुके हैं। वांछित भिक्षा न मिलने पर नारी जाति के शत्रु एवं लोभी लालची पुरूष नवविवाहिता पर अत्याचार करते है। उसे यातनाएँ देते है और मांगी गई वस्तु अथवा धनराशि के प्रतिरोध में उसकी हत्या कर देते है।''[28] दहेज जैसी घिनौनी सामाजिक प्रथा पर 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में प्रकाश डाला गया है। सल्लो जीजी के विवाह में आभूषणों के अतिरिक्त एक लाख रूपये दहेज में दिए गए थे। खूबसूरत लड़की का बदसूरत लड़के से ब्याह कर उसका भविष्य अंधकारमय बनाया गया था । मारवाड़ी समाज के लिए दहेज कितना अनिवार्य है तथा यह समाज इस प्रथा का बरसों से वहन कर रहा है, इस पर प्रकाश ड़ालते हुए प्रभा कहती है- ''1962 में भी अच्छे घर-वर के लिए दहेज में नगद लाख रूपये की जरूरत थी।''[29]

नाजायज रिश्ते से जन्मी नीना परिस्थिति से संघर्ष करते हुए अलग मुकाम हासिल करती है । "नीना के लिए आग हो या पानी वह सब कुछ को जिंदगी का धर्म मानती है, उसके जीवन की अपनी लय है। ऐसा नहीं कि अकेलापन उसे नहीं चुभता पर वह हर तूफान का हँसकर स्वागत करती है और निर्भय होकर हँसती है।"[30]

आधुनिक युग में नारी अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुई है।वह अपने अस्तित्व को महत्व देने लगी है । अतः वह मूक रहकर अपमान, अन्याय एवं शोषण स्वीकार नहीं करती । वह अपने ऊपर हुए अत्याचार का विरोध करती है । इसलिए पति-पत्नी के संबंधों में दरारें पड़ने लगती है । पत्नी का आर्थिक दृष्टि से सबल एवं स्वतंत्र होना पुरूष स्वीकार नहीं कर पाता। पत्नी उसकी दासी बनकर उसके इशारों पर चलें

यही पुरूष चाहता है। परंपरावादी भारतीय समाज में नारी पर वर्चस्व स्थापित करने हेतु पुरूष परंपरा के खंभों का सहारा लेता है या शास्त्रों के तर्क देकर अपना वर्चस्व सिद्ध करता है । नरेंद्र के लिए औरत मात्र भोग्या थी । इसलिए वह हर छह महीने में सेक्रेटरी बदलता है । प्रिया इस रिश्ते से तंग आकर नरेंद्र से संबंध विच्छेद कर लेती है। प्रिया श्रम करके कामयाबी हासिल करती है । नरेंद्र को वह उसके झूठी सफलता का दर्पण दिखाते हुए अधिकार पूर्वक कहती है, "नरेंद्र, तुम ही कौन बड़े महान व्यक्ति हो। पापा के कमाए हुए धन में करोड़ दो करोड़ और जोड़ दिया और लोगों के बीच तीसमारखाँ बने फिरते हो? मैंने तो गली-गली घूमकर अपना काम बड़ा किया है।"[31]

सामाजिक दृष्टि से नारी की स्थिति अच्छी नहीं है। उसकी स्थिति सहज मानवीय न होकर केवल उपभोग की वस्तु बन गयी है । प्रभा जी ने नारी के बारे में कहा है, "पुरूष व्यवस्था ने स्त्री को हमेशा हीनभाव से देखा उसके प्रति कभी उदारभाव नहीं रखे । पुरूष का मूल्यबोध और उसका दमन कार्य इसलिए चलता रहा कि उसने स्वयं को व्यक्ति, विचार और व्यवस्था का प्रतीक माना और स्त्री को वस्तु मानता रहा।"[32]

औरत को औरत होने का बड़ा अभिशाप झेलना पड़ता है। नारी घर के बाहर तो असुरक्षित है ही लेकिन घर में भी वह असुरक्षित ही है । प्रिया जब सात आठ साल की थी तब अपने बड़े भाई विजय के यौन शोषण का शिकार होती थी। कॉलेज में अपने प्राध्यापक द्वारा छली जाती थी। शादी के पश्चात नरेंद्र द्वारा शोषित है। नारी की नियति ही ऐसी है कि उसे अपने जीवन में रोना ही पड़ता है। नारी के जीवन की सत्यता बयान करते हुए प्रिया कहती है - "औरत कहाँ नहीं रोती? सड़क पर झाड़ू लगाते हुए, खेतों में काम करते हुए, एयरपोर्ट में बाथरूम साफ करते हुए या फिर सारे भोग-ऐश्वर्य के बावजूद मेरी सासूजी की तरह पलंग पर रात-रात भर करवटें बदलते हुए । हाड-मांस की बनी ये औरतें अपने-अपने तरीके से जिंदगी जीने की कोशिश में छटपटाती ये औरतें, हजारों सालों से इनके ये आँसू बहते जा रहे है।"[33]

नरेंद्र को प्रिया का उसकी सौतेली सास के पास जाना सुहाता नहीं। वह प्रिया को वहाँ जाने से मना करता है। पुरूष और सेक्स के प्रति प्रिया के मन में घृणा उत्पन्न होती है । वह कहती है, "छि! औरत के लिए ये समाज इतना निर्मम क्यों? और इस समाज को बनाने वाला पुरूष इतना कायर क्यों? नहीं नरेंद्र में मानवीय संवेदना नाम की कोई चीज नहीं थी । वह बस, पैसा, अच्छा खाना और सेक्स समझता था।"[34]

सामाजिक व्यवस्था एवं अनुशासन हेतु समाज में विवाह संस्कार को महत्वपूर्ण माना गया है । परंतु 'अपने-अपने चेहरे' इस उपन्यास में रमा और मिस्टर गोयनका का विवाहेतर संबंध है । जिसे मिसेज गोयनका तो मान्य करती है पर उन्हें पता है कि समाज इसे स्वीकार नहीं करेंगा । वह कहती है, "अरे भाई ! मैं ही हूँ जो बर्दाश्त कर रही हूँ, पर समाज कैसे करे? गलत को तो गलत ही कहा जाएगा । समाज की नजरों में वह कैसे सही होगा? बच्चे भी दब जाते हैं । घर-परिवार वाले भी धन के बल पर खरीदे जा सकते हैं। पर समाज की कसौटी? वह तो संबंध में कहाँ- कितना खोट है, बता ही देगा । अरे एक चुटकी सिंदूर में बड़ा आत्मबल होता है।''[35]

शादी-शुदा नारी का ससुराल छोड़कर मायके आकर रहना समाज की दृष्टि से अनुचित माना जाता है। समाज की मानसिकता है कि वह ऐसी नारी को शंकित दृष्टि से देखता है । भारतीय परंपरा का निर्वाह करनेवाली रीतू की माँ को भी रीतू का मायके आना पसंद नहीं इसीलिए वह अपने बेटी को समझाती है कि उसे धीरज से काम लेना चाहिए । सास-ससुर की सेवा करनी चाहिए। उसका पति उसके पास वापस आएगा ऐसा विश्वास भी दिलाती है । स्त्री को गृहस्थी चलाने का नुस्खा बताते हुए कहती है- "मैं तो बस इतना समझती हूँ कि पति को वश में रखना है तो झुककर चलो ! इतनी छोटी - छोटी बातों को लेकर बहस उठाएगी तो चल चुकी गृहस्थी । अरे, औरत तो गृहस्थी के पैरों तले दबी घास है। मरद के कदम उठे तुम वापस सिर ऊँचा कर लेना । लेकिन जब उसके कदम पड़े तुम तलुओं के नीचे बिछ जाओ ।"[36]

इस तरह विवाहित बेटी का घर वापस लौंटना परिवारवालों को नहीं सुहाता । वह उनके लिए चिंता का विषय बन जाती है। उस पर रमा के आधुनिक विचार हावी न हो जाए। इसलिए चिंतित माँ उसे ससुराल में ही रहने की सलाह देती है।जिसे स्पष्ट शब्दों में नकारते हुए रीतू कहती है, "सहन करो, सहन करो ! मैं नहीं आपके जैसी सहन करने वाली, भीतर ही भीतर जलो, कुढ़ो और ऊपर से हँसने का नाटक करो"[37] रीतू की नजरों में स्त्री की सहना और कुढ़ना यह स्वभावगत विशेषताएँ खत्म होनी चाहिए। नारी को परिवार और समाज के प्रति प्रतिबद्ध होकर जीना पड़ता है। अगर वह पति के अन्याय और अत्याचारों के विरोध में तलाक लेना चाहे तो उसे कटघरे में खड़ा कर उसके मन-मस्तिष्क की शल्य चिकित्सा की जाती है। यही बात वकील साहब महेंदर मि. गोयनका को समझाते हैं। दोनों तरफ से बात कोर्ट में उछाली जाएगी इससे तो अच्छा पारस्पारिक समझौता कर लिया जाए। पारिवारिक विघटन के बारे में पाश्चात्य विचारवंत लिखते हैं, ''पारिवारिक विघटन परिवार के सदस्यों में सामंजस्य का टूटना है।''[38] मि.गोयनका अपनी पुत्री के भविष्य के प्रति चिंतित है। अत: वे सोचते है कि रीतू अभी बत्तीस वर्ष की है । कैसे पहाड़ जैसी जिंदगी अकेली काटेगी और आगे जाकर कहीं और दूसरी मुसीबत न खड़ी हो इसलिए उसके पुत्र को गोद लेकर वह बेटी का पुनर्विवाह करना चाहते है। मि.गोयनका अपनी बेटी को ज्यादा पैसे और गहने देना चाहते है।

मारवाड़ी समाज में आधुनिक विचार पनप रहे हैं । पति के घर से मायके आयी रीतू के बारे में सलाह-मशवरा करने हेतु जब समाज के प्रतिष्ठित श्याम सुंदर जी को बुलाया जाता है तब वे बताते है कि आज समाज में परिवर्तन आया हैं । कलकत्ता में थोड़ी शरम हया बची हैं । दिल्ली बंबई में तो सबकुछ खुले आम चलता हैं । कौन किसके साथ रहता है ? किसका कहाँ अफेयर है ? कौन नहीं जानता। शादियाँ टूट रही हैं । तलाक हो रहे है । फिर वापस शादियाँ भी हो रही हैं ।

रीतू की शादी मिस्टर राजेंद्र गोयनका ढ़ेर सारे रुपये दहेज में देकर ऐसे लड़के से करा देते है जो आगे चलकर घर में दूसरी औरत को लाना चाहता है। रीतू अपना दर्द व्यक्त करते हुए कहती है, "मम्मी आप लोगों ने कुणाल के साथ मुझे धन

के तराजू पर तौल दिया क्या धन ही सबकुछ है?[39] ढेर सारी संपत्ति दहेज में देकर भी स्त्री को स्वतंत्र जीवन नसीब नहीं होता। प्रभा जी कहती है , ''दहेज प्रथा में की जानेवाली मांग संस्कृतिकरण की वह प्रक्रिया है जो अब भी स्त्री को गृहस्थी में सीमित रखना चाहती है।"[40] मिसेज गोयनका इसके बिल्कुल खिलाफ है । वह बहू और बेटी को समानता की दृष्टि से देखती है। वह बेटी का घर छोड़कर आने का सारा इल्जाम मि. गोयनका पर लगाती है।

गँवार और अनपढ़ होने की वजह से मि.गोयनका मिसेज गोयनका की उपेक्षा करते है। मिस्टर गोयनका रमा के प्यार में फँस जाते हैं। वह रमा के भविष्य को लेकर चिंतित तो है लेकिन पत्नी को भी छोड़ नहीं पाते। उनके संबंध की वजह से मिसेज गोयनका हमेशा दबी-दबी-सी रहती है। दूसरी औरत को पिता द्वारा दिया जाने वाला महत्व बच्चों को अच्छा नहीं लगता। पत्नी और प्रेयसी के व्दंद्व में फँसे मि.गोयनका व्यथित होते हैं। वे रमा के भविष्य के प्रति चिंतित हैं। साथ ही वह परिवार का भी त्याग नहीं कर सकते। वे सोचते हैं "कितनी बार तो कह दिया चलो, कही मंदिर में शादी कर आए, पर नहीं। रमा सबकुछ ऐलान करके खुलेआम करना चाहती है और इधर सेठानी तलाक तो देंगी नहीं। कहाँ उठाकर फेकूँ इस औरत को ? अकेली यह रहेगी कैसे ? पढ़ी - लिखी भी नहीं कि खुद को संभाल ले, रमा कमा सकती है, अपने पैरों पर खड़ी है, लेकिन घुटनों के बल घिसटता हुआ यह चालीस वर्षों का साथ ? बच्चों का मुँह देखकर चुप रहना पडता है।"[41]

समाज बहुत स्वार्थी है। अपने खुद के स्वार्थ के लिए वह किसी से भी फायदा उठाता है। यहाँ रमा और मि. गोयनका का संबंध गलत हैं। यह जानते हुए भी मिसेज गोयनका रमा को सहनशीलता की बातें बताती है, तब रमा अपने मन की पीड़ा व्यक्त करते हुए मिसेज गोयनका से कहती है, ''जीजी, आप सहती होगी, मैं नहीं सह सकती और किसलिए सहूं ? मुझे मेरी रोटी खुद कमानी पडती है। कौन क्या करता है, मेरे लिए ? यह भी कोई संबंध है ? जब संबंध को कोई नाम नहीं दिया जा सकता तो क्या जरुरत है ढोने की.. ? मैं मर भी जाऊं तो किसी को क्या फर्क पड़ेगा ? मुझसे अब यह जीवन नहीं सहा जाता?" [42] आधुनिक सुशिक्षित

भारतीय परिवार में दूसरे विवाह को लेकर अभी वही प्रश्नचिन्ह है, जो पहले था। रीतू के दूसरे विवाह के बारे में विचार करते समय यह प्रश्न उठता है- 'नया पिता रीतू के बच्चे को पिता का प्यार दे पाएगा।'

प्रभा खेतान के 'पीली आंधी' उपन्यास में प्रतिबिंबित सामाजिक परिवेश में अनेक सामाजिक समस्याएँ उभरकर सामने आती है। समाज में अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के इन्सान बसते है। यह अनुभव किशन को दिल्ली जाते समय आता है। उसके साथ सफर करने वाला यात्री अपने साथ भोजन करने का आग्रह करता है। किशन को तब कुंवर मानसिंह की बुराई याद आती है। वह सोचता है,''दुनिया में आदमी भी बसते हैं, जानवर भी। कोई दूसरे मुंह का गसिया तोड़कर खिला भी देता है। आखिर दुनिया में आदमी बसते है, सभी तो राजा रतनसिंह जी के बेटे कंवर मानसिंह नहीं हो जाते। कंवर मानसिंह को धन की क्यों जरुरत पड़ी ? क्यों उसने भाया की हत्या की? कुकर्मो के लिए? शराब के लिए?" [43]

आज भी ग्रामीण समाज में विवाह को पारिवारिक संस्कार मानते हुए धूमधाम से किया जाता है। आनंद के साथ गीत गाकर पूरे रीति-रिवाजों से विवाह संपन्न होता है। भारतीय समाज में परंपरा को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। साथ ही वंश को आगे चलाने हेतु बेटे को महत्वपूर्ण और और बेटियों को पराया धन माना जाता है। सेठ सुंदरलाल जी के दो बेटियाँ होने की वजह से वे चिंतित है कि उनका वंश और धन का आगे चलकर क्या होगा ?

हर समाज में प्रथा, परंपरा, रीति-रिवाजों का पालन सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। साथ ही नारी पर तो ज्यादा कड़े बंधन होते है। ओंकार गजमल जी ने बंगाल की प्रथा का पालन करते हुए बिना घूँघट के दुल्हन को विवाह बेदी पर बिठाया, जिससे बहुत हंगामा खड़ा हुआ। बदलते समाज के साथ हमें बदलना चाहिए इस बात से सुंदरलाल जी असहमत थे । पुरानी रुढ़ियों को मानने वाले सुंदरलाल जी का कहना है-"तुम लोग ऐसे अपने संस्कारों का तमाशा करोगे तो हम बाणियों का वंश ही नहीं बचेगा। हम जात-कुजात में ब्याह लगेंगे। भक्ष्य-अभक्ष्य

खाने लगेंगे ये जाति भ्रष्ट होने से जरा सोचकर देखो हमारे पितरो को कितना कष्ट होगा लिछमी ठहरेगी नहीं ।"[44]

हमारा समाज अंधविश्वास में जकड़ा हुआ हैं। भारतीय गावों में अज्ञान के कारण भूत-प्रेत संबंधी अंधविश्वासों के अतिरिक्त और भी बहुत से अंधविश्वास व्याप्त है। माधव की पत्नी को पड़ने वाले मिरगी दौरे पर झाड फूंक का उपाय किया जाता है। चाची उसे बीमार पत्नी का त्याग कर दूसरे ब्याह की सलाह देती है। लेकिन माधो अपनी पत्नी को दिए वचन में बंधा है। पहली पत्नी की मृत्यु के पश्चात वह रुपवती पद्मावती से विवाह करता है। इस अनमेल विवाह से माधो को पछतावा होता है। पद्दमावती पर हुए अत्याचार और अपनी गलतियों के बारे में सोचकर उसका मन व्यथित होता हैं। पद्मावती के सोंदर्य को देखकर राधाबाई का कलेजा ईर्ष्या से जलने लगता है।लेकिन पद्मावती अपने व्यवहार से सभी परिवारवालों का दिल जीत लेती है । माधो की असमय मृत्यु हो जाती है । सांवर के परिवार की जिम्मेदारी पद्मावती पर आती है । विधवा का कष्टमय जीवन उसे गुजारना पड़ता है। अनमेल विवाह की शिकार पद्मावती वैवाहिक जीवन की मर्मांतक वेदनाओं एवं अत्याचारों को सहन करती है। पन्नालाल के प्रति उसका मन आकर्षित होता है पर वह अपने मन को समझा लेती है । सांवर के बच्चों का ब्याह कर उनकी गृहस्थी की गाड़ी ठीक-ठाक करती है । सोमा और गौतम के ब्याह में हर रीति- रीवाज उचित तरीके-से करने हेतु संबंधियों को कहती है ।

स्त्री के लिए संतान का सुख सर्वोपरी होता है । गौतम की नपुसंकता और स्वाभाविक यौन प्रवृत्तियाँ यहाँ परिवार विघटन का कारण साबित होती है। गौतम सोमा को संतान का सुख नहीं दे पाता । समाज की मर्यादा की देहरी लाँघकर सोमा विवाहेत्तर संबंध स्थापित करने हेतु सुजीत से कहती है, "सुजीत मैं तुमसे प्यार करती हूँ । मैं जानती हूँ तुम विवाहित हो, मैं भी तो विवाहित हूँ और हमारा यह अवैध संबंध दुनिया क्या कहेगी ? यही न लेकिन मैं क्या करुं सुजीत ? सब कुछ समझतें हुए भी मैं अपने आपको रोक नहीं पा रही । इसलिए यह सब कह रही हूँ । तुम्ही ने कभी कहा था विवाह एक संस्था है, रजिस्ट्री के कागजों पर सही किया हुआ नाम है

तलाक की व्यवस्था कानून ने बनायी है । कानून मनुष्य के स्वभाव को समझकर ही बनाया जाता है । यदि दो व्यक्ति एक साथ नहीं रह सकते यदि कहीं कोई गहरी कमी हो तब इस संबंध को तोड़ा भी जा सकता है । बल्कि तोड ही देना चाहिए । दो पाटों में पिसती स्त्री की जिंदगी अत्यंत दूभर हो जाती है।"[45] गौतम अपनी पत्नी का अन्य पुरुष से संबंध स्वीकार नहीं कर पाता । सोमा पर गुस्सा होकर, उसे गालियाँ देकर वह उसे घर से निकाल देता है। भारतीय समाज स्त्री के विवाहेत्तर संबंधों को स्वीकारता नहीं है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का जरिया है। शिक्षा के कारण मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा होकर अपने निर्णय स्वयं ले पाता है। चित्रा भी अपनी सौतन को इसी कारण सहजता से स्वीकार करती है। वैसे भारतीय समाज में अपनी सौतन के प्रति प्यार किसी भी स्त्री में नहीं पाया जाता । पर सुजीत की पत्नी चित्रा सोमा को अपने घर में रखती है, उसके दिल का बोझ कम करती है, उसे अपने पैरों पर खड़ी करती है । उसके बच्चे को गोद लेकर अपना नाम भी देती है । इस तरह सुशिक्षित समाज में परिवर्तन हो रहा है।

समाज में विवाहेतर संबंध स्थापित करने वाली औरत का परिवार के लोग त्याग करते हैं । लेकिन सोमा और सुजीत के संबंध के बावजूद पद्मावती उसे अपनी बेटी की तरह प्यार करती है । अंतिम समय उसके हाथों से ही पानी ग्रहण करती है तथा बहुत से अधिकार उसके हाथों में सौंपकर स्वर्ग सिधारती है ।

भारत में यही परंपरा और सच्चाई है कि स्त्री का जीवन एक सीमित दायरे में निहित रहता है । पति, संतान और रसोई यही उसका विश्व है । जिसमें उसे संतोष और आनंद की प्राप्ति भी होती है । परंतु जब उसकी संतान बड़ी हो जाती है तो माँ की उपेक्षा करने लगती है । विधवा पद्मावती भी दयनीय अवस्था में सांवर के बच्चों की देखभाल करती है पर बच्चे उसके साथ बुरा बर्ताव करते हैं, तब पद्मावती भी दुखी होती है।

'स्त्री-पक्ष' उपन्यास में भी नारी के जीवन की भयावह त्रासदी, उसकी घुटन, छटपटाहट, संत्रास एवं बेबसी व्यक्त हुई है। इसमें नारी का जीवन काँच के बर्तन के समान नाजूक माना गया है । उसके साथ हुए गलत काम के लिए भी जिम्मेदार उसे

ही ठहराया जाता है। वृंदा के साथ उनका नौकर छेड़खानी करता है। इस घटना की जिम्मेदार उसकी माँ वृंदा को ही मानती है। अपने चाचा के सामने भी आने से वृंदा को माँ मना करती है क्योंकि उसके चरित्रहीन चाचा के मुस्लिम औरत से संबंध है। वृंदा के पास वाले फ्लैट में रहने वाले स्त्री का पति शराब के नशे में उसे पीटता है इसलिए वह आत्महत्या कर लेती है। इसके लिए वह खुद को जिम्मेदार मानती है। इस प्रकार हर जगह नारी का शोषण ही होता है। अनीश वृंदा के प्रति आकर्षित है। वह एक वर्ष के बाद विवाह का निश्चय कर वृंदा से दैहिक संबंध स्थापित करने हेतु उतावला होता है। वृंदा को यह सब अच्छा नहीं लगता।

आधुनिक युग में जहाँ एक ओर परंपरा से आबद्ध युवतियाँ हैं जिनमें लज्जा और संकोच की भावना है वही दूसरी ओर पाश्चात्य प्रभाव के कारण युवतियाँ खुले सेक्स के प्रति आकर्षित हो रही हैं। अनीश वृंदा का प्रेमी होने के बाबजूद अन्य लड़की के साथ घूमता है। वह लड़की भी स्वच्छंद विचारों की है।

आज भी नारी असुरक्षित है। नारी सुरक्षा एक चिंतनीय समस्या है। जावेद को वृंदा का मित्रों के साथ उठना-बैठना इसलिए अनुचित लगता है, कि उसके साथ कुछ भी घटित हो सकता है। जावेद ने ऐसे ही प्रसंग में वृंदा की सहायता कर उसकी इज्जत बचायी थी। नारी का कमजोर शरीर उसकी स्वतंत्रता में बाधक होता है। बिना सहारे के वह अपने आपको बचाने में असमर्थ होती है। वृंदा एक औरत होने से उसे मर्यादा में रहना आवश्यक हो जाता है। ''आखिर वह एक औरत है। वह कुछ भी करे उसे हमेशा अपनी देह की चिंता करनी होगी। उसके बारे में पुरूष क्या सोचता है, उसे किस दृष्टिकोण से देखता है, उसकी माँ की सहेलियाँ ठीक ही कहती है औरत तो माटी का सकोरा है जरा से दबाव से टूट जाए। अरे औरत को तो खुद को संभल कर रहना पड़ता है क्या भरोसा मरद जात का।"[46]

आज भी पुरूष प्रधान समाज में पुरूष का वर्चस्व एवं अहंकार दिखाई देता है। वह नारी को गुलाम मानता है। वृंदा का पति सुमित का मस्तिष्क द्वैत का शिकार था जब वह खुश होता है तो वृंदा को अपनी जिंदगी अपनी अमानत अपनी सबसे कीमती चीज मानता है और जब नाराज होता है तो उसे बदलचन कहता है उसका तर्क यह

था कि मर्द वही है, जिसमें मर्दानगी हो और मर्दानगी का अर्थ है- "जो अपनी औरत को वश में रख सके। औरत को वश में रखने के लिए साम-दाम-दंड-भेद चारों का इस्तेमाल करना पड़ता है।"[47] आज समाज में 'अर्थ' महत्वपूर्ण माना जाता है। मध्य वर्ग परिवार में बच्चे को जन्म देने से ज्यादा महत्त्व आर्थिक सबलता को दिया जाता है। मध्यम वर्ग परिवार में स्त्री का गर्भवती होना भी स्त्री के लिए एक चिंता का विषय बनता है। सुमित डॉक्टरी की पढ़ाई कर रहा है। इस समय वृंदा का गर्भवती होना सुमित की पढ़ाई में व्यत्यय डालने जैसा मानकर वृंदा की सास वृंदा को ही दोषी ठहराती है। वृंदा का बॉस उसे नौकरी छोड़ने के लिए कहता है। परिवार और समाज में पुत्री नहीं पुत्र पाने की मानसिकता है। जब वृंदा के बेटी होती है तो ससुराल वाले नाराज होते हैं। परंतु जब बेटा होता है तब खुशियाँ मनायी जाती है। उषा बत्रा की दशा भी ऐसी ही हैं। तीन बेटियों पर एक बेटा होने पर उसके भविष्य में आनेवाली मुसीबतें खत्म हो जाती है।

विवाह के पश्चात बच्चे होने पर पत्नी का ध्यान बच्चों पर ही होता है। यौन संबंध के प्रति उसका आकर्षण कम हो जाता है। वृंदा भी बच्चों के जन्म के पश्चात सुमित से यौन संबंध के प्रति नाराजी दिखाती है। यह बात सुमित को स्वीकार नहीं इसलिए वह अपना हक जताने का प्रयास कर उसके साथ जबरदस्ती करता है। साथ ही अपनी सेक्रेटरी सुनीता से विवाहेतर संबंध स्थापित करता है। सुजित का ध्यान परिवार से हटकर सुनीता की ओर बढ़ने लगता है। जिस वजह से वृंदा परेशान होती है। उसके पिता इन सब बातों के लिए वृंदा को ही दोषी ठहराते है। माँ सहन करने की सलाह देते हुए वृंदा को नारी की नियति से परिचित कराती है। "यह औरत का ही काम है कि वह घर की नींव न हिलने दे, बच्चों के माथे पर पिता का हाथ रहे। माना कि इसके लिए औरत को सरकार पद्मश्री नहीं देगी, और न ही घर-गृहस्थी में शहीद होती किस औरत की मूर्ति बनेगी। किंतु पुरूष को नियंत्रित करना, परिवार से जोड़कर रखना औरत के कारण ही संभव है।"[48]

आज विवाहेतर संबंधों की वजह से परिवार टूट रहे हैं। नारी फिर भी इन सब बातों को सहन कर अपनी गृहस्थी बचाने का प्रयास करती है। लेकिन जब रिश्ते को

बचाने का कोई भी रास्ता नजर नहीं आता तब वह विवश होकर तलाक लेना ही पसंद करती है। उदारमना एवं उदात्त वृंदा भी परिवार को टूटने से बचाने का प्रयास करती है। वृंदा सोचती है, "क्या यह केवल मेरी ही जिंदगी में घटा है? जिधर देखो उधर ही तो संबंध चटक रहे हैं। दोस्त जुदा हो रहे है। अनचाहे किसी एक को मौत घेर लेती है और पति-पत्नी बिखर जाते हैं। साथ हैं तो भी बहुतेरे ऐसे हैं, खुद उषा, देविका आदि मेरी अपनी सहेलियाँ, असफल दांपत्य को झेलती हुई। मगर क्यों ?"[49] यह सोच वह सुमित से तलाक लेती है। पिंकी वृंदा जैसी कई शिक्षित नारियाँ है जो विवाहेतर संबंध स्थापित करने में संकोच नहीं करती। उनका मानना है कि पुरूष यह सब करने में संकोच नहीं करते तब वे क्यों करें।

आधुनिक युग में व्यक्ति आत्म केंद्रित बन गया है वह अपने अस्तित्व को बनाए रखना चाहता है। इस कारण दांपत्य जीवन में कटुता उत्पन्न हो जाती है। आर्जव अपनी व्यावसायिक सफलता हेतु मुंबई जाना चाहता है। वृंदा भी अपना बुटिक का व्यवसाय छोड़ना नहीं चाहती। फलस्वरूप उनके दांपत्य जीवन में संघर्ष उत्पन्न हो जाता है।

निष्कर्ष -

प्रभा खेतान के सभी उपन्यासों में सामाजिक परिवेश एवं समस्याओं का यथार्थ चित्रण है। उन्होंने भारतीय एवं पाश्चात्य समाज के कटु और मधुर अनुभवों के साथ उनके अंतर को भी देखा है। भारत जैसे परंपरावादी समाज में नारी का कार्यक्षेत्र केवल घर तक ही सीमित है। अतः उससे यह अपेक्षा की जाती है कि वह भले ही नौकरी या व्यवसाय करे पर उसे ध्यान रखना होता है कि उसका एक परिवार है। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया इसी त्रासदी को भोगती है। इसके विपरीत पाश्चात्य समाज में नारी स्वतंत्र है। उसे अपने व्यक्तित्व को विकसित करने के अवसर प्रदान किए जाते है। परंतु वहाँ भी नारी भोग्या के रूप में ही देखी जाती है। जैसे 'आओ पेपे, घर चलें' की कैथी अपने पैंरो पर खड़ी होना चाहती है। पर पति उसे नौकरी करने से मना करता है। एलिजा पति से प्यार चाहती है पर वह अन्य स्त्री के प्यार में फँस कर एलिजा को तलाक देता है। 'स्त्री-पक्ष' की वृंदा को सुमित त्याग देता है।

सामाजिक समस्या के अंतर्गत दहेज एक महत्वपूर्ण गंभीर प्रश्न बन गया है। दहेज के कारण परिवार विघटित हो रहे है। समाज में बेटी का विवाह अयोग्य लड़के से दहेज देकर संपन्न कराया जाता है। ससुराल में बेटी को किसी बात की परेशानी न हो, इसलिए भी ज्यादा से ज्यादा दहेज दिया जाता है। 'पीली आंधी' में बेटी के विवाह में बहुत सारा धन खर्च किया जाता है। 'आओ पेपे, घर चलें', 'अपने-अपने चेहरे' में दहेज समस्या को प्रस्तुत किया गया है।

पाश्चात्य समाज के प्रभाव के कारण आज कल विवाहेतर संबंध बढ़ रहे है और दांपत्य जीवन में तनाव और विघटन का गंभीर प्रश्न सामाजिक समस्या के रूप में उभर रहा है। 'आओ पेपे, घर चलें' में डॉ. डी. और क्लारा ब्राऊन, 'एड्स' की सोफिया और एनडू का दोस्त, 'पीली आंधी' के सोमा और सुजीत, 'अपने-अपने चेहरे' के रमा और मिस्टर गोयनका रीतू और उसका पति, 'स्त्री-पक्ष' की वृंदा और सुमित पिंकी, देविका,'छिन्नमस्ता' की प्रिया और नरेंद्र आदि पात्रों के जीवन में तनाव और विघटन दिखाई देता है।

नारी का एक ओर परंपरा को मानकर चलना तो दूसरी ओर सारे बंधनों का त्याग कर उन्मुक्त जीवन जीना यह समाज की समस्या का प्रमुख कारण बन रहा है। 'छिन्नमस्ता' में प्रिया का परंपरा के बंधनों को तोड़ कर व्यवसाय करना समाज की दृष्टि से घातक माना जाता है। 'आओ पेपे, घर चलें' की आइलिन का दो पति और पाँच प्रेमियों के साथ रहना समाज की नजर में अयोग्य माना जाता है। 'पीली आंधी' की पद्मावती और पन्नालाल तथा सोमा और सुजीत का प्रेम पाप माना जाता है। 'स्त्री-पक्ष' की वृंदा का आर्जव से और पिंकी का अपने बॉस से संबंध समाज के लिए चुनौती का विषय बन जाता है। प्रभा जी के उपन्यासों के बारे में डॉ. अशोक मराठे जी लिखते है कि "प्रभा जी ने अपने साहित्य में संपन्न मारवाड़ी समाज में चलनेवाली विवाह प्रथा, अनमेल विवाह, संयुक्त परिवार का दर्द, परिवार विघटन, दहेज प्रथा आदि का बड़ा सजीव चित्रण किया है।" [50]

इस प्रकार प्रभा जी के सारे उपन्यासों में सामाजिक समस्या का चित्रण सच्चाई के साथ हुआ है उनके उपन्यासों में दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, विवाहेतर

संबंध, अंध:विश्वास, विधवा का कष्टमय जीवन, लडकी का घर-बाहर होने वाला शोषण रीतिरिवाज, प्रथाएँ, विवाह पद्धति, संतान के प्रति उत्तरदायित्व और संतान का दुर्व्यवहार, परिवार-संबंध-मानमर्यादा, परिवार विघटन और संतान सुख आदि सामाजिक समस्याओं को यथार्थ रूप में अभिव्यक्ति मिली हैं।

4.1.3 प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित धार्मिक परिवेश और समस्याएँ -

भारत सदैव धर्मप्राण देश रहा है। यहाँ समाज का आधार धर्म ही है। धर्म का वास्तविक अर्थ कर्तव्य, सत्कार्य या गुण से होता है। व्युपत्ति की दृष्टि से धर्म 'धृ' धातु और मन प्रत्यय से बना है, जिसका अर्थ है, धारण करना। किसी व्यक्ति या वस्तु की वह वृत्ति, जो उसमें सदा रहे और उससे कभी पृथक न हो, धर्म कहलाती है। जब कोई भी विश्वास अथवा दार्शनिक सिद्धांत विश्वस्त एवं सर्वमान्य होकर किसी संप्रदाय में व्यवहारिकता प्राप्त कर लेता है, तब उसे धर्म की संज्ञा दी जाती है। धर्म का अर्थ कर्तव्य पालन से भी लिया जाता है। प्रत्येक मनुष्य का धर्म है कि वह अपने कर्तव्य का ठीक-ठीक पालन करे। विश्व मानव किसी न किसी धर्म से जुड़ा हुआ है। मनुष्य के मन में धर्म के प्रति आस्था, निष्ठा एवं श्रद्धाभाव होता है। प्रभा खेतान के उपन्यासों में भारतीय एवं पाश्चात्य समाज में धर्म के प्रति विश्वास पाया जाता है। असंभव कार्य को संभव करने हेतु ईश्वर पर भरोसा करना व्रत, उपवास, धार्मिक परंपरा और रूढ़ियों का पालन आदि बातें धार्मिक परिवेश में पायी जाती है। प्रभा खेतान के उपन्यासों में धार्मिक परिवेश से निर्मित समस्याओं में-

1. धर्म में विश्वास
2. अंधश्रध्दा
3. सांप्रदायिक दंगे
4. कर्मकांड
5. पंडितों द्वारा जनसामान्य का शोषण

आदि का यथार्थ चित्रण पाया जाता है।

'आओ पेपे, घर चलें' में आइलिन येशू पर विश्वास रखती है। येशू सबका कल्याण करता है। यदि वह किसी को दु:ख या संकट देता है तो उससे उभरने की

शक्ति भी देता है। अमरिका पहुँचने के पश्चात वहाँ आश्रय न मिलने पर हताश-निराश हुई प्रभा को ये बातें आइलिन समझाती है। भारतीय मूर्तिपूजक है। उसकी माँ उसे कुलदेवता श्रीराम और हनुमान की पूजा करने को कहती है। प्रभा की भी हनुमान जी पर श्रद्धा है। इसलिए वह बार-बार हनुमान चालीसा का पाठ दोहराती है। खिश्चन समुदाय इकतीस दिसंबर की रात आनंद और उल्हास के साथ मनाता है।

'तालाबंदी' के श्याम बाबू ईश्वर की पूजा को अग्रक्रम देते है। हररोज ऑफिस पहुँचने के पश्चात राणी सती और हनुमान जी की तस्वीरों को प्रणाम कर-धूप बत्ती जलाकर अपने कार्य की शुरूवात करते है। अपने बेटे की रक्षा और तरक्की के लिए श्याम बाबू की माँ भगवान से मिन्नते माँगते हुए कहती है, "हे मेरी सती दादी। मेरा लंगड़िया बाबा हनुमान जी! थे सागें चलियों, मेरे लाल की थे रक्षा करोगा।"[51] इस प्रकार लोग अनेक इच्छाओं की पूर्ति के लिए धार्मिक आयोजन भी करते है।

मनुष्य का विश्वास होता है कि, वह जो कुछ भी पाता है भगवान के आशीर्वाद की वजह से ही पाता है। उपन्यास की पात्र सुमित्रा भी देवता जैसे पति को पाकर भगवान के प्रति आभार व्यक्त करती है, "देवता जैसे पति सभी कुछ तो भगवान ने दिया था, इसलिए शिकायत क्यों करे? और किस लिए मन में घमंड लायें।"[52]

भगवान की असीम दया पर श्याम बाबू को विश्वास है। फैक्ट्री में उपस्थित उलझनों से वे इस कदर परेशान हो जाते हैं कि इन झंझटो से मुक्ति पाकर शांति पाने की अभिलाषा करते है। यहाँ तक कि सफलता न मिलने पर वह भगवान पर क्रोध व्यक्त करते है, "हे भगवान! यह कैसी यंत्रणा है! तू सब ले ले। मुझे मुक्ति दे। एलिगन रोड के मोड़ पर हनुमान जी के मंदीर के सामने उन्होंने गाड़ी रोकने को कहा। उतरकर बाबा को प्रणाम किया। ग्यारह रूपयें चढ़ाए, चरणामृत लेकर मन थोड़ा शांत हुआ। संकटमोचन का जाप करने लगे साथ ही यह भी सोचने लगे कि आज यदि मेरा काम न हुआ तो मैं --- हाँ, मैं कभी तेरा नाम नहीं लूँगा।"[53]

'अग्निसंभवा' में अयोध्या के राम मंदीर का प्रश्न धार्मिक समस्या बनकर सांप्रदायिक दंगों का रूप ग्रहण करता है। आयोध्या में राम मंदीर बनने का विश्वास रूचि की सास को है। इसीलिए महंत जी को दस हजार रूपये देना चाहती है । इसी

उपन्यास में युद्ध का कारण धर्म बन गया है। खिश्चियन और मुस्लिम अपने-अपने धर्म को महत्व देते है। अमरिका और इराक का युद्ध इसी का परिणाम है। हैम्प कहता है,"सद्दाम इस शताब्दी का दूसरा हिटलर है। उसने सारी दुनिया की गर्दन अपनी मुट्ठी में बंद कर रखी है। एडॉल्फ हिटलर तो केवल जर्मनी का वर्चस्व चाहता था मगर यह फैनाटिक मुस्लिम।"[54]

संकटमोचन हनुमान जी की आराधना से किसी भी प्रकार का भय शेष नहीं रहता यह बात 'छिन्नमस्ता' की दाई माँ प्रिया को समझाते हुए हनुमान चालीसा का पाठ करने को कहती है। बचपन में प्रिया के बाल झड़ने की बीमारी से चिंतित प्रिया के माँ को दाई माँ बालाजी भगवान और सती रानी की मनौती माँगने की सलाह देती है। प्रसाद महोत्सव और सती को चढ़ावा चढ़ाकर पारिवारिक सामंजस्य स्थापित कर सांस्कृतिक आदर्श स्थापित किए जाते है। विवाह के पश्चात देवी देवताओं की पूजा की जाती है। नरेंद्र की माँ उसे समझाती है, "बेटा शादीवाली रात तो अलग ही सोते हैं ना, कल देवी-देवताओं की पूजा हो जाए, सुहागरात जीमले, उसके बाद ही ----।"[55]

भारतीय समाज में छुआछूत और जात-पाँत को धार्मिक दृष्टि से देखा जाता है। यह परंपरा उच्च वर्ग में विशेष रूप से देखी जाती है। प्रिया की माँ भी इस परंपरा को निभाती है। ''लछमनिया' या राधा खाना बना सकते थे, पर अम्मा को चौके में सबका जाना नहीं सुहाता था। जात-पाँत और धरम-करम का वहम उसके मन में पल्थी मारकर बैठा रहता। खासकर मेहतर की सीढ़ी अलग थी।"[56]

भारतीय धर्म में तीर्थयात्रा एक धार्मिक अनुष्ठान है। इससे मानसिक शांति मिलती है। उम्र में ढलान आने के बाद संसार से मुक्त होकर ईश्वर का स्मरण कर तीर्थयात्रा करनी चाहिए, ऐसा 'अपने-अपने चेहरे' की मिसेज गोयनका का मंतव्य है। वह अपने पति को समझाती है कि, "मैं तो कहती हूँ अब छोड़िए दुनिया जहान का प्रपंच रमेश का ब्याह हो जाए तो फिर चलते है तीरथ करने। अब जरा भागवत भजन में मन लगाइए। पूजा पाठ किया कीजिए।"[57] मिसेज गोयनका एक सांसरिक एवं धार्मिक स्त्री है। वह रमा से सिंहानिया हाऊस पर भागवत प्रवचन हेतु चलने का

आग्रह करती है। हर उम्र में भगवान का स्मरण किया जाता है ऐसा उनका मानना है रमा अपने व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्ध है। फिर भी संकट के समय सुशिक्षित होने के बावजूद उसका धीरज टूट जाता है और वह अपने ग्रह दशा को दोष देती है।

'पीली आंधी' उपन्यास में धार्मिक अनुष्ठान के अतंर्गत किसी शुभ अवसर पर ईश्वर को प्रसाद चढ़ाया जाता है तथा लोगों को महाप्रसाद हेतु भोजन करवाया जाता है। पहली बार कुएँ को पानी लगने पर अन्नदान किया जाता है। दिसावरी गए अपने बेटे की चिंता में माँ हनुमान जी की आराधना कर भैरूजी के मंदीर में चढ़ावा भेजती है। चिंता, आशंका और भय से सिहरकर लंगड़िया बाबा का स्मरण कर एक सौ एक बार हनुमान चालीसा का पाठ करती है। व्यापार में आर्थिक लाभ होने पर वापस सुजानगढ़ आने पर किशन और रामेश्वर पूजा-पाठ, दान दक्षिणा और भोजन करवाने का विचार करते है।

गंगा नदी को धार्मिक धरोहर मानकर उसके प्रति भक्ति-भाव रखकर उसकी पूजा की जाती है। किशन भी हावड़ा स्टेशनपर उतरते ही गंगा नदी में स्नान कर सूरज देवता को अर्ध्य देकर हनुमान जी के दर्शन करने के पश्चात काम पर निकलता है। माधो की पत्नी की मिरगी की बीमारी औषधियों से ठीक न होने पर बालाजी का स्मरण कर राधाबाई जिन माता का स्मरण करती है। अपनी गलती की माफी माँगती है। रतिजुगा करवाने की तथा चांदी का कलश चढ़ाने की मनौती मानती है। ईश्वर के प्रति श्रद्धा भाव व्यक्त करते हुए रूँगटा परिवार भजन रखता है। जिसमें जात-पात ऊँच-नीच का भेद भुलाकर लोग तन्मय होकर ईश्वर की आराधना करते हैं। राधाबाई की काशी में मृत्यु होने के कारण सभी उसे पुण्यात्मा मानते है। उसकी अंतिम इच्छानुसार उसकी कोठी में बाबा विश्वनाथ का मंदीर बनाया जाता है, यह अंधविश्वास है।

भाग्य और कर्म को धर्म में महत्वपूर्ण स्थान है। मनुष्य जैसे कर्म करता है वैसे फल उसे प्राप्त होते है। सेठ सुंदरलाल जी भी शराब, जुआ रंडीबाजी इन अपने बुरे कर्मो से बरबाद हो जाते हैं।

मिसेज अग्रवाल अपनी बेटियों को अच्छा परिवार और पति प्राप्ति हेतु संतोषी माता और सोलह सोमवारों का व्रत करने को कहती है। इस उपन्यास में पूजा पाठ गणगौर एवं करवाचौथ जैसी धार्मिक प्रथाओं का भी उल्लेख पाया जाता है। पाप-पुण्य को मानते हुए पद्मावती कोलियारी का कोयला ब्लॅक में बेचना अनुचित मानती है। पद्मावती धर्म को पवित्र आचरण और शुभ कार्य मानती है। धर्म के नाम पर होने वाले कर्मकांड को वह अनुचित मानती है। इस उपन्यास के सुराणा की पत्नी निमलीबाई भी धार्मिक एवं श्रद्धालु औरत है। जैन धर्मीय होने के बावजूद भी वह मंदीर जाती है, रतिजुगा और कीर्तन में शामिल होती है।

'स्त्री-पक्ष' में धार्मिक परंपराओं का उल्लेख हुआ है। वृंदा की माँ सती की पूजा करती है। उसकी चाची सती से अपने सुहाग की भीख मांगती है। विवाह के पश्चात वृंदा भी सती की पूजा करती है। पति से प्रेम न मिलने पर वृंदा जब देविका के साथ आश्रम जाती है तो गुरुजी धार्मिक प्रवचन में यही संदेश देते है, "ज्यादा सोचा मत करो, बुद्धि के चलाए मत चलो,अपने आपको उस सर्व के हवाले कर दो। तुम्हारी हर समस्या खत्म हो जाएगी। बस ध्यान करो। नामस्मरण करो।"[58] हमारे समाज में शिक्षित भी अंधविश्वासों से ग्रस्त हैं। वृंदा को तांत्रिक बाबा पति की चाय में मिलाने हेतु भस्म देकर गुमराह करता है। साथ ही वृंदा को धार्मिक पाखंड की बातें बताकर उसे अंधविश्वास की गहरी खाई में ढकेलता है। "तुम्हारी जन्मकुंडली में विष योग हैं, इसीलिए तुम्हें पति सुख नहीं मिल रहा। अब की शिवरात्री पर व्रत रखना और शिवजी पर एक भारी सोने का सर्प बनाकर चढ़ा देना,तुम्हारा काम हो जाएगा।''[59]

पंडितों और पुरोहितों तथा धर्मशास्त्रियों ने अपनी धनलोलुपता के कारण ऐसी अनेक रूढ़िवादी मान्यताओं और अंधविश्वासों को फैलाया जिससे अज्ञानी समाज उसमें फँसता जाता है। देवी-देवताओं की पूजा, भूत-प्रेतों में विश्वास, पशु-बलि, मनौतियाँ एवं प्रायश्चित्त आदि ने धर्म को पंगु और खोखला बना दिया है। धर्म के ठेकेदार अपने स्वार्थ के कारण सभी धार्मिक विकृतियों का पोषण कर रहें हैं। इसका यथार्थ चित्रण प्रभा के 'स्त्री-पक्ष' उपन्यास में मिलता है। बाबा जैसे अनेक पाखंडी

साधु-संन्यासी है जो स्त्रियों की मानसिकता पहचानकर अपनी स्वार्थ सिद्धि करते हैं। यदि बाबा के बताए गए व्रत से किसी स्त्री को लाभ होता है तो श्रेय बाबाजी को मिलता है। यदि विघ्न उपस्थित होता है तो वे कहते भगवान उनकी परीक्षा ले रहा है। अतः धीरज रखो। यह अंधविश्वासी मानसिकता है। ''जो प्रार्थना पूरी हुई, बाबाजी का ताबीज, पत्थरोंवाली अंगूठिंयो का चमत्कार था। जो पूरी नहीं हुई, लोग उसके बारे में भूल जाते..। कुल मिलाकर औरतों की भीड़ बढ़ती रही, भीड़ कभी खत्म नहीं हुई।''[60]

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता हैं कि प्रभा खेतान के उपन्यासों के धार्मिक परिवेश में धार्मिक परंपराएँ, प्रथाएँ, व्रत, उपवास, तीज, त्यौहार आदि का यथार्थ चित्रण हुआ है। अंधविश्वास एवं पाखंड की और भी उन्होंने अपनी दृष्टि डाली हैं। 'पीली आंधी' में माधो की पत्नी की मिरगी की बीमारी दूर करने हेतु उसे बाबा के पास ले जाते हैं। 'स्त्री-पक्ष' की वृंदा सुमित का प्यार पाने हेतु बाबा के पाखंड में फँस जाती हैं। 'अपने-अपने चेहरे' की रमा ग्रहदोष के बारे में चिंतित हो जाती हैं। 'आओ पेपे, घर चलें' में क्रिसमस का वर्णन है। 'तालाबंदी' में श्याम बाबू उनकी माँ एवं पत्नी का भगवान पर भरोसा एवं विश्वास बताया गया हैं। 'एड्स' में क्रिश्चियन और मुस्लिमों के बीच संघर्ष का कारण अपने- अपने धर्म की वर्चस्वता स्थापित करने की होड़ माना गया है। 'छिन्नमस्ता' में स्पृश्य और अस्पृश्य समस्या का निरुपण है, जिसमें उच्च वर्ग दवारा अस्पृश्यता पालन करने का प्रसंग चित्रित हैं। 'पीली आंधी' में तीज, त्यौहार, चौथ, व्रत, उपवास, रतिजुगा, मनौतियाँ, अन्नदान, भजन आदि धार्मिक बातों का विस्तार से विवेचन है। इस उपन्यास में धार्मिक अंधविश्वास एवं पाखंड का यथार्थ वर्णन हुआ है। भारत में अज्ञान के कारण भूत-प्रेत संबंधी अंधविश्वास व्याप्त है। आज के विज्ञान युग में भी अंधविश्वास प्रासंगिकता रखता है। 'स्त्री-पक्ष' के पात्र पाखंड एवं अंधविश्वास में लिप्त हैं। प्रभा खेतान ने केवल मानवी संस्कार एवं आचरण के लिए धर्म को आवश्यक माना है।

4.1.4 प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित सांस्कृतिक परिवेश और समस्याएँ :-

संस्कृति, समाज एवं साहित्य का पारस्पारिक संबंध है। वे एक-दूसरे के विकास में पूरक एवं सहायक हैं। मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना एवं उनकी रक्षा का कार्य संस्कृति ही करती है। संस्कृति में देश के धर्म, साहित्य, रीति-रिवाज परंपराओं सामाजिक संघटन आदि सब अध्यात्मिक और मानसिक तत्वों का समावेश होता है। इन सबके समुदाय का नाम संस्कृति हैं। संस्कृति से मनुष्य को समझ,सूझ-बूझ एवं ज्ञान की प्राप्ति होती है। डॉ.गुलाबराय कहते है, संस्कृति शब्द का संबंध संस्कार से है। जिसका अर्थ है संशोधन करना, उत्तम बनाना, परिष्कार करना । संस्कार व्यक्ति के भी होते है और जाति के भी। जातीय संस्कारों को ही संस्कृति कहते है।''[61] संस्कार मनुष्य के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण होते है। संस्कारहीन मनुष्य केवल पशुवत माना जाता है। प्रभा खेतान ने सांस्कृतिक समस्याओं में-

१. भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति का अंतर
२. श्वेत-अश्वेत के भेदभाव की समस्या
३. सांस्कृतिक मूल्यों का -हास

आदि का यथार्थ चित्रण किया है।

'आओ पेपे, घर चलें' उपन्यास में प्रभा खेतान ने पाश्चात्य एवं भारतीय संस्कृति के परिवेश और उससे निर्मित समस्याओं को स्पष्ट किया है। भारत में सत्तर वर्ष की औरत अपने बेटे और उसके परिवार की देखरेख करते हुए प्रभु भजन में मन लगाती है। जब कि पाश्चात्य समाज में पली आइलिन सत्तर वर्ष की है। वह दो पति और पाँच प्रेमी रखती है। उसका पाँचवा प्रेमी रोजर विवाहित होने के साथ उससे दस साल छोटा है। पाश्चात्य समाज की हेल्गा में मातृत्व दिखाई नहीं देता। वह पत्नी और माँ की भूमिका से परे अपनी अलग पहचान बनाना चाहती है। वह प्रभा से कहती है, ''मुझे मेरे बच्चों से प्यार नहीं, वे मरे, जीएं या कहीं भी जाए।''[62] भारतीय नारी परिवार के बीच अपना अकेलापन भुला देती है, जबकि पाश्चात्य नारी आइलिन अपना अकेलापन भूलाने के लिए शराब में डुबी रहती है। भारतीय संस्कृति में पत्नी एक ही पति सात जनम तक मिले इसलिए करवाचौथ का व्रत करती है, जब कि पाश्चात्य

समाज में पति-पत्नी एक साथ एक साल भी नहीं गुजार पाते। पिता के प्यार से वंचित बच्चे संस्कारहीन हो जाते हैं। मरील का उसके पति से तलाक होनेपर उसकी बेटी लारा डेन में जाकर गांजा पीती है। रिबेल होकर अपना नियंत्रण खो देती है। एम.ए.पास होने पर प्रभा जब पहली बार लिपीस्टिक लगाती है, तो उसकी माँ उस पर गुस्सा होती है। जब प्रभा कैथी के कहने पर अपने बाल कटवाती है, तो समाज के बारे में सोच कर ड़र जाती है। सादा जीवन और उच्च विचार यह भारतीय परंपरा है। लेकिन पाश्चात्य समाज में नारी सजने-संवरने को अधिक महत्व देती है। सत्तर वर्षीय आइलिन इकतीस दिसंबर की रात को अपनी लटे अलग-अलग रंगों में रंगाती है। दसों उंगलियों के नाखून में दस रंग की नेल पॉलिश लगाती है।

अमरिका में श्वेत और अश्वेत समाज के सांस्कृतिक वातावरण में टकराहट है। श्वेतों के द्वारा अपमान और घृणा सहन करते-करते अश्वेतों में प्रतिशोध की भावना उदित हो रही है। अश्वैत कैथी पर बलात्कार का प्रयास होता है। ऐसा सांस्कृतिक मूल्य के ऱ्हास के कारण ही होता है।

'तालाबंदी' उपन्यास की सुमित्रा पति-परायण पत्नी बनकर पति को परमेश्वर मानकर उसकी सेवा करती है। यह भारतीय परिवारों में पाया जानेवाला सांस्कृतिक मूल्य है। पति की उलझनों को देखकर पत्नी परेशान हो जाती है। वह पति से किसी भी चीज की मांग नहीं करती। भारतीय संस्कारों में बेटा माँ के प्रति कर्तव्य को निभाते हुए माँ को खुश रखने का प्रयास करता है। श्याम बाबू भी अपनी माँ को कहते, ''मां तू खा-पी, दान-पुण्य कर... चिंता ही मत कर तेरे सांवरो तन तकलीफ कोनी देव।''[63]

एक तरफ संस्कारों का पालन करने वाला बेटा श्याम बाबू, पति परायण पत्नी सुमित्रा है तो दूसरी ओर अपने ही पिता से नाराज होने वाला और अपने पिता का लिहाज न कर उनके मुँह पर ही खरी खोटी सुनाने वाला बेटा पप्पू है। जो अपने पिता से कहता है, ''पापा आप हुयमन नहीं। आपके लिए घर, परिवार किसी का कोई महत्त्व नहीं। मम्मी बोलती नहीं। उनको आपसे ड़र लगता है पर आप ? आप तो

अपने व्यवसाय के अलावा कुछ और सोच ही नहीं पाते।''[64] इस तरह इसमें आधुनिक संस्कारहीन और विद्रोही युवा का चित्रण भी है।

चीन प्राचीन संस्कृति के प्रति प्रतिबद्ध है। यहाँ की वास्तुकला अनुपम है। जबकि हांगकांग में ऐश्वर्य और विलास का बोलबाला है। 'अग्निसंभवा' में लेखिका ने यह सच्चाई वॉग द्वारा अपनी माँ को लिखे पत्र के माध्यम से व्यक्त की है, ''तू जानती है, हांगकांग मुझे कभी रास नहीं आया। वहां की भोगवादी दुनिया छोड़ मैं यहां बीजिंग, अपनी जड़ों को समझने चला आया। कितनी प्राचीन संस्कृति..।''[65] आलफर्ड शिव वर्णसंकर है। वह अपने बच्चों को केवल अंग्रेजी कल्चर पढ़ाता है। आइवी को दुख है कि अपने देश की जाति और संस्कृति से बच्चों को उसने परिचित कराना चाहिए था। पाश्चात्य संस्कृति में स्त्री और पुरूष एक साथ ड्रिंक्स करना अनुचित नहीं मानते। 'एडस्' उपन्यास की सोफिया अपने पति के दोस्त के साथ अनैतिक संबंध बनाती है जिससे उसे एडस् की बीमारी होती है। पर पुरूष का स्पर्श भी भारतीय नारी के लिए वर्ज्य है। प्रभा साथ सफर करने वाले यात्री एण्डू के स्पर्श से विचलित हो जाती है। पाश्चात्य नारी भी प्यार की इच्छा रखती है लेकिन पाश्चात्य संस्कृति का श्वार्ज अपनी पत्नी कुक्कू को छोड़ अन्य औरतों के प्यार में फँसा रहता है।

भारतीय संस्कृति में प्रामाणिकता, प्रेम, समर्पण आदि नैतिक मूल्यों को महत्व दिया जाता है। परंतु 'छिन्नमस्ता' की प्रिया का दृष्टिकोण है कि ईमानदारी, वफादारी, प्यार, समर्पण से राष्ट्र भरा है। ये शब्द स्त्री को इसलिए सिखाए जाते है कि वह इन शब्दों के चक्रव्यूह से कभी बाहर न निकल पाए। वह अपनी आहुति की परंपरा को बनाए रखे।

भारतीय संस्कारों में अंतिम संस्कार हेतु पुत्र अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। प्रिया के जन्म पर उसकी दादी भविष्य के प्रति बेटे को आगाह करती है। पर प्रिया के पिता संस्कारों का विरोध कर जवाब देते है "माँ सब अपना-अपना भाग्य लेकर आती है। जैसी राम की मर्जी।"[66]

'छिन्नमस्ता' में विविध संस्कारों का पालन किया जाता है। सभी संस्कारों, व्रत एवं परंपराओं के बंधनों में नारी को जकड़ कर उसका शोषण किया जाता है। भारतीय संस्कारों में विवाह को जीवन का एक अनिवार्य अंग माना गया है। विवाह समय पर ही होना चाहिए। अगर किसी कारण जवान लड़की अविवाहित रही तो लोग उसे संदेह की दृष्टि से देखते है। यही स्थिति 'अपने-अपने चेहरे' की रमा की है। विवाह न करते हुए भी वह मिस्टर गोयनका से संबंध बनाती है। उसकी दयनीय स्थिति के प्रति स्वयं मिसेज गोयनका संवेदनशील होकर कहती है, "अरे कितना भी बिजनेस कर ले, पढ़ाई कर ले लेकिन एक चुटकी सिंदूर का आत्मबल ही अलग होता है।"[67]

भारतीय परंपरावादी संस्कृति में संस्कारों का महत्वपूर्ण स्थान है। पुरूष के विवाहेतर संबंध होने के बावजूद पत्नी को जो स्थान प्राप्त होता है वह दूसरी स्त्री को प्राप्त नहीं होता।यही बात मिसेज गोयनका रमा और मिस्टर गोयनका के संबंध के बारे में सोचती है। आज उच्च वर्ग में विवाहेतर संबंधों के साथ मद्यपान का प्रचलन भी बढ़ रहा है। कुणाल विवाहेतर संबंध स्थापित कर पार्टी में शराब का सेवन करता है।

मनुष्य का मन एवं मस्तिष्क शुद्ध एवं पवित्र बनाने हेतु तथा मनुष्य को सुसंस्कृत, शिष्ट, अनुशासित, आचरण प्रिय, शीलवान आदि गुणों से मंडित करने के लिए भारतीय संस्कृति में जन्म से लेकर मृत्यु के पश्चात तक आयु के अनुरूप विविध संस्कार किए जाते हैं। 'पीली आंधी' उपन्यास में इन सभी सांस्कृतिक परिवेशों का उल्लेख पाया जाता है। ग्रामीण स्त्रियाँ अपने पारिवारिक दायित्वों को निभाते हुए सभी संस्कारों का पालन करती है, जैसे सुबह चाकी पर बैठना, बिलोना, रसोई या टांका करना आदि तो कलकत्ता जैसे नगरीय परिवेश की स्त्रियाँ गाना, बजाना, किताबें पढ़ना या पति के संग नाटक देखने जाना आदि संस्कारों का पालन करती है।

भारतीय समाज में विवाह संस्कार बड़े उत्साह और विधि-विधान से मनाया जाता है। नववधू का श्रृंगार भी भारतीय संस्कृति को दृष्टि में रखकर ही किया जाता है। प्रभा खेतान ने विवाह के अवसर पर विविध संस्कारों के साथ गाना, बजाना, वधू

को मामा का गोद में उठाकर लाना, फेरे में बिठाना आदि का यथार्थ वर्णन 'पीली आंधी' इस उपन्यास में किया है। परंपरा के अनुसार दूसरे दिन नववधू को मायके भेजा जाता है। माधो की पहली पत्नी के निधन के पश्चात दूसरे विवाह में भी हर संस्कारों का पालन किया जाता है।

व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात किया जानेवाला अंत्येष्टि संस्कार व्यक्ति की आत्मा की मुक्ति के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। ताईजी की मृत्यु के पश्चात उसका अत्येंष्टि संस्कार पूरे विधि-विधान से संपन्न होता है। इसमें चार लाख रूपये का खर्च होगा यह सुनकर गौतम इसका विरोध करता है। लेकिन सोमा को ताईजी द्वारा किए गए पितृपक्ष के संस्कार को निभाने की घटना याद आती है। सभी बातें विधि से हो और उसमें कोई गलती न हो इस बात का ताईजी विशेष ध्यान रखती थी, इसलिए उसके लिए भी संस्कार निभाए जाते हैं।

कलकत्ता में आकर बसे मारवाड़ी विविध अवसरों पर राजस्थान के अपने गांवों में धर्मार्थ धन दान करते रहते है। पन्नालाल जी भी अपनी डायरी में बड़े बाबू के श्राद्ध के संस्कार का उल्लेख करते हैं, "आज बड़े बाबू का श्राद्ध है। ब्राह्मणों को भोजन करवाया गया। धोती गमछा और सवा रूपया दक्षिणा दिया गया। अन्नदान, वस्त्रदान, गोदान सब कुछ दिया गया। चुरू में धर्मादे का रूपया भेजा गया।"[68]

'स्त्री-पक्ष' में नारी पर हर वक्त उसके स्त्रीत्व के संस्कार किए जाते है। स्त्री के साथ जो भी गलत घटता है उसके लिए स्वयं स्त्री को ही दोषी ठहराया जाता है। स्त्री को हमेशा पवित्र एवं चरित्रवान रहना चाहिए यही सीख दी जाती है। पति को भगवान मानकर उसकी पूजा करने का संस्कार वृंदा की माँ उसपर करती है। भारतीय संस्कृति में पुत्री की अपेक्षा पुत्र के महत्व को भी इसमें उजागर किया गया है। रचित के पैदा होने पर जिस प्रकार संस्कार एवं आनंद व्यक्त किया जाता है वैसा रिया के जन्म पर नहीं दिखाई देता।

भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव होने के कारण आज भारतीय नारी के संस्कारों में भी परिवर्तन होता दिखाई दे रहा है, "यदि मन मिल जाए तो शरीर को क्यों संजोना? कुंवारापन कोई संपत्ति तो नहीं है कि उसे इतना

संभाल कर तौल कर सात तालों में बंद रखा जाए।"[69] आज की स्त्री को विवाह संस्कार में बंधना याने पुरूषों की दुनिया में कैद होना ऐसा लगता है। इसलिए वह इन संस्कारों से दूर भागने का प्रयास करती है। भारतीय संस्कृति में स्त्री को कुछ बंधनों में बांधकर उसे कमजोर और असहाय बनाया जाता है।

निष्कर्ष - इस प्रकार प्रभा खेतान के उपन्यासों में सांस्कृतिक परिवेश तो दिखाई देता है पर सांस्कृतिक समस्या कम मात्रा में ही पायी जाती है। 'आओ पेपे, घर चलें' में युवा पीढ़ी के बदलते संस्कारों पर चिंता व्यक्त की गई है। इसमें संस्कार, कर्तव्य एवं प्यार से ज्यादा अपने अस्तित्व के प्रति प्रयत्नशील पाश्चात्य महिलाओं का चित्रण है। 'तालाबंदी' उपन्यास में प्रेम-समर्पण और नैतिक मूल्यों के पालन के साथ-साथ नैतिक मूल्यों का उल्लंघन भी पाया जाता है। 'अग्निसंभवा' में चीन की प्राचीन संस्कृति की प्रशंसा की गई है। पाश्चात्य समाज के भोगवाद और नैतिक पतन का वर्णन कर एड्स जैसे महत्वपूर्ण प्रश्न पर चिंतन व्यक्त किया है। 'अपने-अपने चेहरे' में बदलते समाज का चित्रण कर रमा और मि. गोयनका के रिश्ते को उछाला गया है। 'पीली आंधी' उपन्यास में सोलह संस्कारों के विधान के पालन के साथ-साथ उन संस्कारों को नकारने वाले पात्र भी नजर आते हैं। 'स्त्री-पक्ष' उपन्यास में स्त्री को भारतीय संस्कारों में बाँधने वाले समाज का चित्रण है।

4.1.5 प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित मनोवैज्ञानिक परिवेश एवं समस्याएँ -

साहित्य मानव मन का सूक्ष्म अध्ययन एवं विश्लेषण करता है। मनुष्य की स्वभावगत विशेषताओं का आकलन मनोवैज्ञानिक परिवेश से होता है। मनुष्य के मन में एक साथ अनेक कल्पनाएँ, भावनाएँ एवं विचार समाहित होते है। प्रभा खेतान ने नारी मन की स्थिति को समझा और उसकी पर्तों को खोलकर रखा।

मनोवैज्ञानिक परिवेश के अंतर्गत प्रभा खेतान ने -

1. कुंठा
2. अंर्तद्वंद्व
3. चिंता
4. क्षोभ

5. ईर्ष्या-निराशा

6. आत्म पीड़न-पर पीड़न

आदि समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है।

'आओ पेपे, घर चलें' उपन्यास की नारी पात्र मरील में मन की दुर्बलता, चिंता, परेशानी, ईर्ष्या आदि बातें दृष्टिगत होती है। पति से तलाक लेकर मरील अपनी दोनों बेटियों के साथ रहने लगती है। पर इस परिवार के तीनों सदस्यों में प्रेम, आकर्षण एवं अपनापन नहीं है। अपने काम में व्यस्त परिवार का बोझ ढोते-ढोते मरील अपनी परिस्थिति के लिए पति को दोष देती है। बेटी का पिता के प्रति स्नेह देखकर मरील में ईर्ष्या निर्माण होती है।

डॉ. डी. का प्यार न मिलने पर उनपर आसक्त एलिजा में हीनता ग्रंथि व्याप्त होती है, "मेरा मनोविज्ञान मुझसे कहता है, तुम जार्ज से मनोग्रस्त हो। यह प्यार नहीं बल्कि शराबी का नशा है। वह कहता है एलिजा बार-बार के इस रिजेक्शन से तुम्हारी अपनी आत्मा धुंधली होती जाती है। तुम में हीनभाव आता जा रहा है।"[70] क्लारा की ओर जॉर्ज का रूझान देखकर उसकी अचेतन की पीड़ा उभरती है। उसे लगता है पुरूष को नारी का यह रूप इतना मुग्ध क्यों करता है ? ''हम सब कही आत्मपीड़न को अचेतन में समेटे हुए है।''[71]

पाश्चात्य देशों में नारियाँ अपने शरीर को लेकर हीनता ग्रंथी से ग्रस्त है। अपने शरीर के मोटापे को दूर करने हेतु वह हेल्थ क्लब जाती है। पाश्चात्य नारियाँ अपनी अहं भावना के कारण खुद को श्रेष्ठ समझती है। मिसेज डी भी रईसी के तमाम प्रतीकों को जमा कर रईसी का दिखावा करने का प्रयास करती है।

औरतों में आत्मविश्वास की कमी होती है। इसलिए हर समय वह केवल रोती रहती है। अपने मन के जख्मों को किसी अपने व्यक्ति के पास व्यक्त करके मनुष्य खुद को हल्का महसूस करता है। एलिजा आइलिन को अपनी माँ मानकर उसकी गोद में अपने आप को महफूज समझती है। लेकिन आइलिन की मृत्यु के पश्चात वह मनोविकार तज्ञ के पास जाकर पैसे खर्च कर सुकून पाने का प्रयास करती है।

व्यक्ति के अन्तर्मन में एक ग्रंथि ऐसी होती है जिससे अपने मन की परतों को वह छिपाकर रखना चाहता है। प्रभा को लगता है कि हेल्गा अपने अतरंग की बातें क्यों नहीं बताती। हेल्गा कहती है, "यह मेरा निजी कोना है। हर आदमी के ख्यालों का, अनुभवों का एक अलग-अलग भरा कोना होता है, जिसमें किसी का साझा नहीं हो सकता।"[72] प्रभा कहती है उसका ऐसा कोई कोना नहीं । हेल्गा उसे समझाती है तुम्हारे मन में भी एक कोना ऐसा अवश्य है जिससे तुम अपरिचित हो। वह कहती है, "तुम एकांत में पत्र पढ़कर उदास होती हो, इससे यही सिद्ध होता है कि तुम्हारा भी कोई अंतरंग है, परिचित होते हुए भी हम 'हम' होते हैं और दूसरा 'दूसरा'। एक सीमा तक ही अंतरंगता बर्दाश्त होती है, उसके बाद आदमी बिलकुल अकेला।"[73]

हेल्गा अपने पिता एवं भाई के साथ घटित त्रासद और दु:खी घटनाएँ याद कर दु:खी एवं प्रक्षोभित होती है। वह अपने दर्द को भुलना नहीं चाहती, बल्कि प्रतिशोध की आग में जलती रहती है। नारी में प्रेम, दया, माया, सहानुभूति श्रद्धा, विश्वास, आदि उदात्त गुण होते हैं पर हेल्गा में ईर्ष्या, द्वेष एवं बदले की भावना चरम सीमा में दिखाई देती है। हेल्गा अपने पति के दुर्व्यवहार के कारण बिखर जाती है। वह अपने देश जाना चाहती है और अपनी नस्ल के लिए ही जीना चाहती है।

नारी का जीवन प्रेम के अभाव में कुंठित हो जाता है। नारी की त्रासदी है कि वह पुरानी सड़ी गली, रूढ़ियों और परंपराओं के बंधनों में जकड़ी हुई है। कैथी को अपनी माँ की बातें याद आती है, "हम एक टूटती हुई सड़ी-गली व्यवस्था की उपज है, पर तुम कल की भविष्य की औरत हो। तुम हमारी जैसी मत बनना। हम कमजोर है स्वयं अपनी ही कुंठा की शिकार है, पर तुम मजबूत बनना।"[74]

व्यक्ति अपने जीवन की आपत्तियों-विपत्तियों का सामना नहीं कर पाता और दुर्बल मन एवं सहन शक्ति कम होने पर वह आत्महत्या करने का प्रयास करता है। डॉ. डी. के बिना जीवित रहने की कल्पना न करनेवाली एलिजा नींद की गोलियाँ खाकर आत्महत्या करने की चेष्टा करती है।

विक्षिप्त आचरण की असंतुलित मनस्थिति वाली सनकी और पागल 70 वर्षीय वृद्धा आइलिन के मन में धनाढ्य और सुंदर नारियों के प्रति ईर्ष्या है। वह उनकी

तुलना में अपने आपको देखती है। रात में नग्न होकर ठंडे पानी से नहाना उसकी मनोविकृति है।

स्वप्नजीवी मनुष्य अपने सपनों को साकार करने के लिए अथक परिश्रम करता है। महानगरीय परिवेश में मनुष्य के स्वप्न कभी पुष्प के समान खिल जाते है और कभी वह स्वप्न अंकुरित होने से पूर्व समाप्त हो जाते है। स्वप्नभंग होने के कारण उनमें निराशा, कुंठा एवं जीवन के प्रति उदासीनता व्याप्त हो जाती है। सोनिया प्रभा से यही कहती है, "यह न्यूयार्क है, यहाँ सपने बनते है और सपने टूटते है। कभी मैंने भी बेहद मीठा सपना देखा था कि मैं 'कार्नेगी हाल' में जाऊंगी और आज इन छिलकों की तरह जीवन का सारा रस निचुड़ गया है।"[75]

मनुष्य के साथ जब अघटित घटता है तब वह निराशा की गर्त में चला जाता है। प्रभा के साथ भी ऐसा ही घटित हुआ है। बचपन में प्रभा के पिता की मृत्यु के कारण वह कुंठित हो जाती है। बाल मन बहुत कोमल होता है। वह भयावह घटनाओं को भूल नहीं पाता। अपनी प्रिय व्यक्ति बिछड़ जाने पर वह मनोरूग्ण बन जाता है। उसके मन में भय का संचार होता है।

मनुष्य का मन सुखात्मक स्थिति से दु:खात्मक स्थिति आने पर भी वह अपने रईसी ठाठ को नहीं त्यागता। प्रभा के पिता की मृत्यु के बाद भी उनकी माँ पुराना तामझाम वैसा ही रखने का भरपूर प्रयास करती है। दूसरे का दु:ख देखकर कभी-कभी मनुष्य खुद के भविष्य के प्रति भी डर महसूस करने लगता है। कैथी अपनी बहन एलिजा के साथ हुए हादसे से खुद को असुरक्षित महसूस करती है और अपने व्यक्तित्व एवं सम्मान प्राप्ति हेतु प्रयत्नरत रहती है।

'तालाबंदी' के श्याम बाबू फैक्ट्री के झंझटों से परेशान है। माल समय पर पार्टी को नहीं मिला तो वे बरबाद हो सकते है, दूसरी ओर उनकी माँ जिंदगी और मौत के बीच झूल रही है। ऐसे समय उनमें हीनता ग्रंथि जागृत होती है। माँ से मिलने की इच्छा होते हुए भी परिस्थिति के सामने वे लाचार हो जाते है। मनुष्य के मन में शंका प्रतिशंकाएँ, प्रश्न-प्रतिप्रश्न उमड़ते रहते है। परिवार के लिए सबकुछ करने के पश्चात भी जब परिवार ही चोट पहुँचाता है तो मनुष्य का मन आहत हो जाता है। श्याम बाबू

भी अपने परिवारवालों की वजह से परेशान है। प्यार पाने की ललक में वह सबकुछ निछावर कर देते है फिर भी वह प्यार प्राप्त नहीं कर पाते तो गुस्सें में वह सबसे निजात पाना चाहते हैं। वे अपने मन को दोलायमान अवस्था में पाते हैं।

व्यक्ति चिंता में डूबा रहने पर तनाव में यौन क्रिया में आनंद और तृप्ति प्राप्त नहीं कर पाता। श्याम बाबू भी फैक्ट्री के झंझटों से इतने उलझे है कि पत्नी की इच्छा भी पूरी नहीं कर पाते। जिससे अतृप्त सुमित्रा व्यथित होती है। 'अग्निसंभवा' की प्रभा भी हीन भावना से ग्रस्त है। वह कहती है, "आज तो कितनी चीजों को देखकर अनदेखा करती हूं, चुनौतियों से बचकर चलती हूं। उसकी कीमत भी चुकायी है। औरतपने का हीनभाव, पुरूषों की दुनिया में बार-बार अपना औचित्य स्थापित करना चाहता रहा है। क्या मैं औरत हूं इसलिए यह काम नहीं करूंगी? करके दिखा दूंगी।"[76]

'अग्निसंभवा' की आइवी अपने बेटे वाँग की मृत्यु की याद कर व्यथित होती है। अपना आक्रोश प्रभा के सामने व्यक्त करती है। वह प्रभा पर व्यंग्य करते हुए अपना दु:ख प्रकट करती है, "प्राफा, परेशान मत होओ। मेरे आँसू कब टपकने लगेंगें, मुझे खुद ही पता नहीं रहता। प्राफा, मैं रोते-रोते थक गयी हूँ, बिल्कुल थक गई हूं, तुम नहीं समझ सकती संतान का दु:ख।"[77]

प्रथम दृष्टि में जिस पुरूष के प्रति नारी के मन में तटस्थ भाव होता है उसके सामीप्य को वह सहन नहीं कर पाती। 'एड्स' उपन्यास में प्रभा भी अपने सहयात्री का सान्निध्य सहन नहीं कर पाती। वह तनाव-सा महसूस करती है- "मैंने एक गहरी सांस ली। फिर अपनी सांसों पर ध्यान केंद्रित किया। गहरे और गहरे अपने में डूबने की तैयारी, सारी चेतनाओं को केंद्रीभूत करने की तैयारी। बगल में बैठै हुए यात्री से पूरी तरह कटने की तैयारी। नहीं मुझे किसी से कोई बात नहीं करनी। औपचारिकता भाड़ में जाये। उसको बात करनी है, वह बगल वाले औरत से कर ले। मैंने कनखियों से देखा है दोनों आपस में बात कर रहे है। चलो अच्छा हुआ।"[78] 'एड्स' उपन्यास की प्रभा किसी से प्रेम संबंध नहीं बनाना चाहती, क्योंकि उसने अपने जीवन में कटु अनुभव प्राप्त किए थे। उसका मन धीरे-धीरे सबकुछ मौन होकर सहने लगा था।

सच्चाई तो यह है कि एक बार टूटा हुआ मन फिर से जोड़ा नहीं जा सकता। साथ प्रवास करनेवाला यात्री जब प्रभा को कॉफी के लिए कहता है तब वह मन ही मन गुस्सा होती है। उसे पता था, पहले पूछताछ और बाद में प्रेम की स्थिति होती है। वह फिर से इस त्रासदी के भँवर में फँसना नहीं चाहती थी। प्रभा प्यार, प्रतिक्षा, झगड़े-झमेले आदि से अब ऊब चुकी थी। वह अपने जीवन में किसी पुरूष को स्थान नहीं देना चाहती।

पाश्चात्य देशों में आत्मीयता की भावना लुप्त हो जाने के कारण व्यक्ति अकेलापन भोगने को विवश है। कभी-कभी व्यक्ति को अकेलेपन में भी आनंद प्राप्त होने लगता है। नायिका प्रभा कहती है -"अकेलापन एक बेबसी है। कुछ इसे ढोते हैं मगर कुछ अपनी बेबसी का भी मकसद खोज लेते है, वे अकेलेपन में रस लेने लगते है।"[79]

'छिन्नमस्ता' की प्रिया अस्वस्थ होने के कारण विदेश के हॉस्पिटल में पड़े-पड़े अपने पूर्व जीवन की आपत्तियों-विपत्तियों का स्मरण करती है। अपने जीवन की त्रासदी उसे याद आती है। प्रिया ने बहुत दु:ख झेला था। सारे जुल्मों और चुनौतियों का सामना करने के कारण उसमें अपने पैरों पर खड़े होने का आत्मविश्वास आ जाता है। मानव मन की विशेषता के अनुसार प्रिया को भी सुखात्मक से अधिक दु:खात्मक प्रसंग याद आते है। अपने अकेलेपन की त्रासद स्थितियाँ बयान करते हुए प्रिया सोचती है, "लेकिन ये अकेले रहने का एक लाभ है। भीतर जमी बर्फ पिघलती है और तरल पारदर्शी चेतना घटी हुई घटनाओं को देख पा रही है। बहुत कुछ भीतर ऐसा है। जिसकी अब मैं उपेक्षा नहीं कर सकती। मेरा यह निजी कोना काम की व्यस्तताओं के मुखोंटो के पीछे छुपा हुआ था। लेकिन अब यों खुद को छलने से फायदा? अकेले होने की पीड़ा, त्रासदी, आतंक मैं क्या नाम दूँ इसको? पर इतना प्रभाव तो मेरे मन पर पड़ा ही है आँसुओं को मैं तेज रफ्तार से दौड़ते हुए सुखाती रही।"[80] नियति के यथार्थ को स्वीकार करते हुए संघर्षशील जीवन में प्रयत्नशील रहना यह प्रिया के जीवन की विशेषता है। मारवाड़ी समाज और पति नरेंद्र का विरोध सहन करते हुए भी प्रिया अपने व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्ध रही। वह परिस्थिति के हाथों की

कठपुतली नहीं बनती। वह जिंदगी के विरोधाभासों की गाँठे सुलझाती हुई छोटे-छोटे प्रयास कर आत्मविश्वास से आगे बढ़ती है। अपनी अड़तालीस वर्ष की आयु में उसने अनेक संघर्षो का सामना अकेले ही किया था। अपने मूल्यों को जीवन में संजोते हुए वह बार-बार टूटी थी पर कही चोट के निशान नहीं थे। उसका एक ही दु:ख था कि उसकी माँ ने उसे कभी वात्सल्य भाव से नहीं देखा, कभी प्यार नहीं किया। चौथे नंबर की बेटी तथा वर्ण से काली होने के कारण वह माँ द्वारा हमेशा उपेक्षित ही रही। इस उपेक्षा से उसमें हीनता बोध निर्माण हुआ। उसकी माँ का जीवन भी संघर्ष से भरा रहा। उसका आक्रोश कभी आत्मपीड़न और कभी परपीड़न के रूप में व्यक्त होता है। वास्तव में आत्मपीड़न और परपीड़न एक विकृति है इसमें कभी आपने आपको और कभी दूसरों को पीड़ित कर मानसिक संतोष प्राप्त होता है। 'छिन्नमस्ता' की कस्तुरी देवी एक जिद्दी और अहंकारी बच्चे की भाँति खुद को सताती तो कभी शब्दों के बाण चलाकर परपीड़न में सुखी होती थी। प्रिया के भाई-बहन उन्हें दंतली कहकर चिढ़ाते। आया का कहना था कि उसे जितना ही साबुन और तौलिया लेकर रगड़ो काला रंग और चमकने लगता है। ऊँचा कद होने के कारण उसे कक्षा में हमेशा पीछे बैठना पड़ता था। उसके नये जूते, नये कपड़े पहले सरोज पहनती थी। इस प्रकार प्रिया पिता को छोड़कर सभी के द्वारा उपेक्षित, अपमानित होती रही। उसकी हीनता को बार-बार उभारा जाता था। मनोविकार तज्ञ एड़लर के अनुसार "मानव अपने को अत्यंत श्रेष्ठ तथा सबकी श्रद्धा का पात्र बनाने के लिए जिस जीवन शैली का निर्माण करता है, उसमें सामाजिक और वैयक्तिक आदर्शों का सामंजस्य संभव नहीं हो पाता। इस जीवन शैली का निर्माण सभी में होता है क्योंकि सभी हीनता की भावना से पीड़ित होते हैं।"[81] प्रिया माँ के व्यंग्य से विद्रोही बन जाती है। उनके व्यक्तित्व की कमी को लेकर उन्हें बार-बार अपमानित किया जाता तब वह हताश-निराश हो जाती। यह स्थिति उसके अवचेतन में बैठ जाती। यही बातें स्वप्न में अनुभव कर प्रिया भयभीत होती। उसे बार-बार डरावने सपने आते और भय के कारण वह रोती चीखतीं है। बचपन में यौन अत्याचार का शिकार होने पर वह इतनी आतंकित हो गयी थी कि उसमें पुरूष जाति के प्रति भय समा गया था। उसके मन में

दबा हुआ यही भय स्वप्न में उभर आता। वह अकेले में दर्पण के समक्ष अपने शरीर को बार-बार देखती कि उस पर कोई बलात्कार के चिह्न तो शेष नहीं है। प्रिया की यह त्रासदी है कि वह सरलमना होने के कारण छली जाती रही। प्रो.मुखर्जी द्वारा हुए छलावे के पश्चात सच्चाई ज्ञात होने पर प्रिया आत्मपश्चाताप दग्ध अवस्था में अपने को दोषी मानती है। भावना के आवेश में उससे भूल होती है। उस भावना में वैचारिकता और व्यवहारिकता हा अभाव होता है। वास्तविकता का ज्ञान होने पर उसके मन में व्द्ंव्द उठता है और वह आत्महत्या करने का विचार करती है। उसे अपने आप पर क्रोध आता है। तब उसमें प्रतिशोध लेने की भावना पनपती है। उसमें पुरूष और सेक्स के प्रति घृणा निर्माण होती है। वह पुरूष से बदला लेने के लिए ठंडी औरत बनने का विचार करती है।

जब प्रिया अपना स्वतंत्र व्यवसाय प्रारंभ कर उसमें सफल होती है तब नरेंद्र में ईर्ष्या एवं अहं का भाव जागृत होता है। वह प्रिया के प्रति खूँखार हो जाता है। उसके इस व्यवहार का दु:ख वह मन में दबाए रखती है। एकांत एवं एकाकी क्षणों में अपने अकेलेपन से वह व्यथित होती है। पति से अलग रहने के कारण प्रिया को समाज में आशांकित दृष्टि से देखा जाता है। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में उस पर तीक्ष्ण व्यंग्य-प्रहार किया जाता है। इस कारण प्रिया का मन आक्रोश कर उठता है - "मेरा अंत, मेरी समझ में आ रहा था। एक पूरी हीन ग्रंथी, खंड़ित आत्मतस्वीर, एक टूटा हुआ अक्स, जिसमें मुझे कभी मेरा चेहरा साफ नहीं दिखा। मैं न्यूरोटिक होती जा रही थी।"[82] उसके न्यूरोटिक होने का मुख्य कारण उसकी बेचैनी है।

मनुष्य के जीवन में एक ऐसा मुकाम आता है कि वह अपने विगत जीवन की शल्य-चिकित्सा करने लगता है। अपने किए हुए व्यवहार का विश्लेषण करता है, उचित और अनुचित का व्दंव्द उसके मन मस्तिष्क को मथता है - "तर्क और विश्लेषण। मैं अपने जीवन का, परिस्थितियों का जर्रा-जर्रा विश्लेषण कर रही थी। विश्लेषण, चीर-फाड़, अजीब-सा व्द्ंव्द! अपने होने और नहीं होने के बीच मेरे अपने ठोस हाड़ मांस के जीवित शरीर यह कैसा अभाव कैंन्सर की तरह खाए जा रहा था।"[83] प्रभा जी द्वारा किया गया 'छिन्नमस्ता का मनोविश्लेषणात्मक निरूपण अनुपम

है। अपना अस्तित्व प्राप्त करना मनुष्य की स्वाभाविक इच्छा होती है। 'अपने-अपने चेहरे' की रमा भी वृक्ष का आश्रय लेने वाली लता नहीं बनना चाहती। इसलिए वह मि.गोयनका के साथ किसी कार्यक्रम में हिस्सा नहीं लेती। रमेश की कामयाबी में रमा का हाथ होते हुए भी रमेश की शादी के समय परिवारवाले उसकी उपेक्षा करते हैं। तब उसका व्यथित हृदय यह भाव व्यक्त करता है, "ओह मैं दूसरी औरत हूँ ना। माँ का हृदय? नहीं, दूसरी औरत के पास हृदय ही कहाँ? फिर ममत्व का सवाल ही कैसे पैदा होता है?"[84] रमा के मन में संघर्ष चलता है कि उसकी स्वयं की पहचान क्या है? आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होने पर भी वह मि. गोयनका की प्रेमिका के रूप में सदैव हाशिए पर ही है। उसे मि. गोयनका से जुड़ने का पछतावा होता है। परायेपन का बोध होने के बावजूद वह उनके परिवार के साथ आत्मीयता से ही रहती है। उसका अपना कोई परिवार नहीं है। अपने अकेलेपन को काटने के लिए वह व्यवसाय में मग्न रहकर पारिवारिक अभाव से दूर रहती है। भौतिक दृष्टि से संपन्न होते हुए भी रमा का मन अशांत ही रहता है। ऐसी स्थिति में वह आत्मीय संबंधों की अपेक्षा करती है। उसका संवेदनशील मन विचार करता, "बस इतना जानती हूँ कि हर मुकाम पर जूझती हुई औरत कितनी बेसहारा है। वह धन कमा लेती है। नाम यश भी कमा लेती है। लेकिन धन यश से ही सब कुछ नहीं होता। जिंदगी में जरूरत होती है, मानवीय उष्मा और लगाव की कोई अपना है, यह ख्याल भी कितना अच्छा लगता है।"[85]

रमा तीन बच्चों के पिता मि. गोयनका से प्रेम संबंध स्थापित करती है। हिसाब-किताब न रखते हुए सहजता एवं स्वाभाविकता से वह उनके प्रति आकर्षित होती है। अपने अतीत को देखते हुए वह अपने अकेलेपन की त्रासदी से उभरने का प्रयास करती है। लेकिन यह अकेलापन उसे बार-बार कचोटता है। अपने और मि. गोयनका के रिश्ते के बारे में उसे खुद लज्जा और झिझक महसूस होती है। अपने अतीत की स्मृतियों से वह मुक्ति पाना चाहती है। लेकिन प्यार की इच्छा के कारण से मुक्त नहीं हो पाती।

रोना उसकी स्वभावगत विशेषता बन गई है। शोषित होना उसे अच्छा लगता है। उसका और मि. गोयनका का विवाहेत्तर संबंध समाज को मान्य नहीं है। इसलिए वह निरंतर समाज से आशंकित एवं आतंकित रहती है। समाज की दृष्टि में उसके अवैध संबंध उसे घटिया ही सिद्ध करते है। समाज के घात-प्रतिघातों को झेलती हुई वह अपने प्रिय को छोड़ नहीं पाती है। वह प्रिय के प्रति इतनी आसक्त है कि उसके लिए समाज से भी वह घृणा करती है। रमा की दृष्टि में समाज महत्वहीन है। उसकी दृष्टि में प्रेम ही सबकुछ है। भावनात्मक संबंध में आए उतार-चढ़ाव से वह व्यथित होकर अकेलेपन को सहती है।

मनुष्य मन की विशेषता है कि वह भविष्य की अनिश्चिंतता के संबंध में सोचकर ही भयभीत और व्यथित होता है। यही स्थिति मि. गोयनका की बेटी रीतू की होती है। अपने अकेलेपन को वह सहन कर पाएगी या नहीं यह प्रश्न उसके सामने है। मिसेज गोयनका रमा के जीने का तरीका, साहस और परिवार तथा व्यवसाय को शांति से चलाने का कार्य देखकर हीन ग्रंथि से ग्रसित होती है।

'पीली आंधी' उपन्यास की छोटी बीणनी के विवाह के दस दिन बाद उसका पति किशन व्यापार करने हेतु दिसावरी जाता है तब वह कौए के साथ संदेश भेजती है। सोमा अपनी बहन-भावना के विवाह के समय मायके जाती है और वहाँ अपने ससुराल वालों की बुराई सुनती है, तो वह गुस्सा होती है। ससुराल और मायके के संस्कारों में अंतर को देखकर भी सोमा के मन में व्द्ंव्द उपस्थित होता है। यौन तृप्ति और पति का प्रेम प्राप्त न होने पर सोमा के मन में तरह-तरह के प्रश्न उपस्थित होते हैं, "आखिर गलत क्या है? ऐसा कौन-सा अपराध मैं कर रही हूँ..? क्या कभी विवाहित स्त्री ने अन्य विवाहित पुरूष को प्यार नहीं किया? फिर यह भय और ग्लानि क्यों?"[86]

'स्त्री-पक्ष' उपन्यास की वृंदा शाम को स्कूल से लौटने के पश्चात अकेली बैठी अपने खालीपन के बारे में सोचती है। वह अपने घुटन भरे जीवन से मुक्ति चाहती है। उसका मन भविष्य के स्वप्न देखता है। वह एक ऐसे पुरूष की कल्पना करने लगती है जिसका व्यक्तित्व आकर्षक एवं सुशिक्षित होगा जो दुनिया की सभी झंझटों से

उसकी रक्षा करेगा। यौन प्रवृत्ति का सहज एवं स्वाभाविक संवेग जो किशोरावस्था में होता है, वही आनंददायक उत्तेजना एवं परितृप्ति की तीव्र आकांक्षा वृंदा में उभरती है। नर और मादा की प्रतिध्वनि उसके रोम-रोम में गूंजती रहती है। लेकिन प्रेमी अनीश की यौन तृप्ति की मांग पर उसके मन में व्दिधा निर्माण होती है। वह घृणा और प्रेम के व्द्ंव्द के बीच फँसकर रातों को चौंककर उठती है, अपने शरीर के साथ खेलती या किसी पुरूष के अस्तित्व को महसूस करती है। अपनी अस्मिता को लेकर वृंदा सदैव भयभीत रहती है। भय एक मनःस्थिति है जिसमें मन सदैव किसी अप्रिय प्रसंग की संभावना से आशंकित रहता है, "आतंक से उसका सर्वांग सिहर उठता। शरीर पर होनेवाले हजारों जख्म, खून के धब्बे, वृंदा अपने क्वारेपन के लूटने के भय से त्रस्त थी, आतंकित थी, दहशत में कुछ सोच ही नहीं पाती थी। वह अपनी रक्षा करने में असमर्थ थी और जो अपनी रक्षा स्वयं नहीं कर सकता भला फिर उसकी मानवीय गरिमा उसकी इज्जत और कौन कैसे बच सकता था?"[87] अकेली औरत दुनिया के भेडियों के बीच अपनी अस्मिता नहीं बचा सकती। उसे इसके लिए पति रूपी पुरूष की आवश्यकता है। वृंदा के मन में संघर्ष उभरता है कि उसके जीवन में दो ही विकल्प है या तो वह साध्वी हो जाए या सुमित से विवाह कर ले। अतः वह विवाह करने का निर्णय लेती है।

मनुष्य मन की विशेषता के अनुसार वृंदा भी अपनी गलतियों पर पछताती है। पिंकी की खुली जिंदगी, उसका सुख देखकर वृंदा के मन में ईर्ष्या उत्पन्न होती है। वह मन में ईर्ष्या द्वेष की अकथनीय पीड़ा सहती है। कभी वह आत्मविश्लेषण करती तो कभी उसे पश्चाताप होता कि महत्वाकांक्षी होते हुए भी वह ऊँचाईयों को स्पर्श न कर सकी। सुमित से मनमुटाव होने पर वह अपने आपको असहाय अनुभव करती है। तलाक हो जाने के पश्चात उसका मन टूट-सा जाता है। एकाकी जीवन की भयावहता से उसके मन-मस्तिष्क में द्वंद्वात्मक स्थिति निर्माण होती है।

निष्कर्ष -

प्रभा जी के उपन्यास नारी केंद्रित हैं। उन्होंने नारी के मन की वेदना और अंर्तव्दंव्द को मनोवैज्ञानिक परिवेश में व्यक्त किया है। उनके "आओ पेपे, घर चलें"

की लारा और मरील में प्रेम के अभाव से उपजी वेदना है। नायिका प्रभा अविवाहित होने की त्रासदी भोग रही है। एलिजा क्लारा की तुलना में अपने को हीन समझती है। इस हीनता ग्रंथि से वह सदैव दु:खी रहती है। हेल्गा पति के दुव्यर्वहार से उससे प्रतिशोध लेना चाहती है। कैथी प्रेम की अप्राप्ति के कारण मनोकुंठित है। आइलिन का निराधार जीवन उसके मन को असंतुलित करता है। 'अग्निसंभवा' की आइवी अपने पुत्र की हत्या होने के पश्चात मानसिक संतुलन खो बैठती है। उसके मन का हताश-निराश होना, उसका निरंतर रोते रहना उसकी आत्मपीड़ा का द्योतक है। 'एड्स' की प्रभा अविवाहित होने के कारण अकेलेपन की पीड़ा से ग्रसित है।

'छिन्नमस्ता' की प्रिया और 'अपने-अपने चेहरे' की रमा एक ओर व्यवसायिक सफलता और दूसरी ओर परिवार और समाज की उपेक्षा से व्दंव्दात्मक अवस्था में है। उसमें प्रतिशोध की भावना जन्म लेती है। दोनों में प्रेम और यौन के प्रति लगाव और झुकाव दिखाई देता है। उसमें अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति संघर्ष परिलक्षित होता है। 'पीली आंधी' की सोमा दांपत्य जीवन की असफलता की वजह से मानसिक दृष्टि से अशांत है। 'स्त्री-पक्ष' की वृंदा नारी की समस्याओं के कारण हीनता बोध एवं आत्मपश्चाताप दग्ध अवस्था में जी रही है।

इस तरह प्रभा खेतान के उपन्यासों में मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि में नारी की कुंठा, संत्रास, पीड़ा, चिंता, क्षोभ, ईर्ष्या, निराशा, आत्मपीड़न, परपीड़न आदि अनेक समस्याओं का वास्तव चित्रण हुआ है।

4.1.6 प्रभा खेतान के उपन्यासों में चित्रित राजनीतिक परिवेश और समस्याएँ -

समस्त देशवासियों के कल्याण के लिए जिस नीति को अपनाया जाता है वह नीति है राजनीति। राजनीति जनकल्याण, जन पालन तथा जनता को समुचित रूप में शासित करके उनके अवैध, अनुचित, विध्वसंकारी, भ्रष्ट आचार पर अंकुश लगाकर उन्हें सत्य एवं शिव की ओर अग्रेसर करती है। जिन राजनीतिक मूल्यों को लेकर राष्ट्र का ढाँचा तैयार किया जाता है। उन्हीं के अनुरूप उस राष्ट्र में मानव प्रतिमा जन्म लेती है। जब भी राजनीतिक मूल्यों में परिवर्तन या विघटन होता है तब वह समस्या की भूमि तैयार करके समस्त समाज को अनैतिकता के कगार पर खड़ा करके

उसे क्षति पहुँचाता है। वर्तमान युग में समाज, राजनीति और धर्म तीनों विकृत हो गए है। इस विकृति के मूल में व्यक्ति की स्वार्थ भावना और पदलिप्सा है। प्रभा खेतान ने राजनीतिक समस्याओं में-

1. नस्लवाद
2. श्वेत-अश्वेत संघर्ष
3. देशी-विदेशी राजनीतिक परिवेश
4. भ्रष्टाचार
5. आतंकवाद

आदि का यथार्थ चित्रण किया है।

'आओ पेपे, घर चलें' में अमरिका की तत्कालीन राजनीतिक समस्या को लेखिका ने यथार्थ के धरातल पर उठाया है। उन्होंने वहाँ के श्वेत एवं अश्वेत के बीच के संघर्ष का साहस के साथ से रेखांकन किया है। वहाँ गोरे अमरिकन के खिलाफ नस्लवाद का आरोप था। कैथी प्रभा के साथ जिस क्षेत्र में गई वहाँ उसे भयानक हिंसा और वहशी भीड़ का सामना करना पड़ा। निग्रो युवक हिंसक दृष्टि से देखते हुए क्रोध जताते हुए कहते है, "वी विल फक यु, द बास्टर्ड सन ऑफ विच।"[88]

प्रभा अपनी राजनीतिक ज्ञान की कमजोरी के बारे में हेल्गा से कहती है, "मैं तुम्हारी सारी बातें समझ नहीं पा रही हूँ हेल्गा। सच कहूँ तो मेरा राजनीतिक ज्ञान बड़ा कच्चा है।"[89] नस्लवाद की शिकार हेल्गा यहूदी है। वह अमरिका में रहकर अपनी नस्ल को बनाये रखने के लिए ढ़ेर सारा पैसा कमाना चाहती है। उपन्यास की आइलिन व्दितीय महायुद्ध के समय जर्मनी से भागकर अमरिका आती है।

बंगाल राजनीति से अधिक प्रभावित है। वहाँ मार्क्सवाद ने अपना स्थान निश्चित कर लिया है। साम्यवादी विचारधारा को माननेवाली प्रभा व्यवसाय जगत में प्रवेश करने के बाद बंगाल के मार्क्सवाद से अच्छी तरह परिचित होती है। वह 'तालाबंदी' में लिखती है, "श्याम बाबू, आदमी जब कम्युनिस्ट हो जाता है, तब मार्क्स का सिद्धांत और मार्क्सवाद अच्छी तरह समझता है।"[90] प्रभा भारत की कॉंग्रेस (आई) पार्टी को अधिक मात्रा में मार्क्स से प्रभावित पार्टी मानती है। स्वर्गीय इंदिरा गांधीजी ने

भी मार्क्सवाद से ही बहुत कुछ सीखा था। वह कहती है, "अरे इंदिरा गांधीजी ने पूरी शिक्षा मार्क्सवाद का इतिहास, सिद्धांत युनियन की भूमिका वर्ग संघर्ष सब कुछ भूपेन गुप्त जैसे खांटी कम्यूनिस्ट से ली थी।"[91] व्यावसायिक बुजुर्ग लोग युवकों को राजनीति से तटस्थ रहने का उपदेश देते हैं। 'तालाबंदी' में अजित भी राजनीति से दूर रहता है। राजनीति ने अच्छे बंगाली लड़कों का भविष्य बिगाड़ दिया है। अजित को सारे झंडों से नफरत है।

राजनीति में भ्रष्टाचार अपनी जड़ें मजबूती से जमा रहा है, जिसके कारण गरीबी बढ़ रही है। देश का विकास नहीं हो पा रहा है। 'तालाबंदी' उपन्यास का विक्रम राजनीति के दुर्व्यवहार का वर्णन मध्यमग्राम के रास्तें की दुर्दशा से करता है। राजनीति में कार्य करनेवाला नेता केवल भ्रष्टाचार से पैसे कमा रहा है। पैसा प्राप्त करने का जरिया राजनीति बन गया है। लोगों को ठगकर केवल आज अपना स्वार्थ साधा जा रहा है। पीनू ऐसा ही एक सीटू का सदस्य है। इसके संबंध में डॉ. अशोक मराठे कहते है, "मार्क्सवाद को मानने वाली प्रभा कुछ मात्रा में मार्क्सवाद का नकाब ओढ़े लोगों की पोल खोलते हुए नजर आती है। 'तालाबंदी' में श्याम बाबू को मार्क्सवाद पढ़ानेवाले टिचर के पास ले जानेवाला पीनू दोनों हाथ से लड्डू खाता है। एक और मार्क्सवाद के सिद्धांतों को महत्व देता है, तो दूसरी ओर पैसा कमाने हेतु सिद्धातों से समझौता करता है।"[92]

भारत में व्यापारी एवं व्यवसायिक वर्ग यह समझ गया है कि अब अर्थ पर राजनीति आश्रित है। श्रम का अलगाव, उपभोक्ता वस्तुओं का प्रसारण, निरंतर मुद्रास्फिति, गिरता हुआ जीवन स्तर, पूंजी का केंद्रीकरण और नौकरशाही की फिजूलखर्ची आदि का असर राजनीति पर भी पड़ता है। हरिनारायण चट्टोपाध्याय श्याम बाबू को समझाते हुए कहते है , "राजनीति वास्तव में अब अर्थनीति के ऊपर हावी है।"[93] प्रभा श्याम बाबू के माध्यम से बंगाल की राजनीति और तत्कालीन मुख्यमंत्री ज्योति बाबू का सीटू युनियन पर बढ़ते दबाव का चित्र अंकित करना चाहती है, "नहीं सर सीटू इतनी कमजोर नहीं है। आजकल जरा ऊपर से ज्योति बाबू का दबाव है। पार्टी कैडर कोई आंदोलन नहीं कर पा रहे। इसलिए मजदूरों को बाहर

वाले भड़काते है।"[94] इससे ज्ञात होता है कि मजदूर यूनियन आज राजनेताओं के हाथ की कठपुतली बनी है। राजनेता जब चाहे जैसा चाहे उसे दबा देता है। प्रभा खेतान ने भारतीय व्यापारियों की आपसी राजनीति और रणनीति का भी पर्दाफाश किया है।

प्रभा ने 'तालाबंदी' उपन्यास में पूंजीवाद के विरोध में सर्वहारा वर्ग के संघर्ष को उजागर किया है। सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाली रेवा मारवाड़ी जाति पर अपना क्रोध व्यक्त करती है। रेवा मजदूरों के कल्याण के लिए चिंतित है। फैक्ट्री में बढ़ते झमेले की वजह से श्याम बाबू को अपना भविष्य अंधकारमय लगता है। इन झंझटों से मुक्ति पाने के लिए मिस्टर भूतोड़िया उन्हें 'Divide and Rule' का सिद्धांत अपनाने को कहते है। लेकिन राजनीति को पसंद ना करने वाले श्याम बाबू मजदूरों के पेट की चिंता करते हैं। पूंजीवाद और मार्क्सवाद के पारस्पारिक विरोध पर आधारित राजनीति का सूक्ष्मांकन लेखिका के स्वानुभवों का परिणाम है।

'अग्निसंभवा' में प्रभा चीन की कम्युनिस्ट व्यवस्था का पर्दाफाश करना चाहती है। चीन में भले ही माओ ने सांस्कृतिक क्रांति कर कम्युनिस्ट अवधारणा का परिचय दिया हो परंतु उसके पीछे तानाशाही नौकरशाही का जुल्म छुपा हुआ है। आइवी कहती है "भूख, गरीबी, और मार्क्सिज्म के नाम पर नौकरशाही का जुल्म उनमें बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार।"[95]

आइवी का बेटा वॉग अपने पत्र के जरिए राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार और नौकरशाही का यथार्थ वर्णन करता है। "अब हमें बोलना होगा हमें चाहिए वैचारिक स्वतंत्रता पार्टी के शिकंजे से प्रेस की मुक्ति हम चाहते है। वास्तव का जनतंत्र, जनता का राज ताकि नौकरशाही का जुल्म और भ्रष्टाचार खत्म हो, यह मैंने हांगकांग रहकर समझा कि किस तरह हांगकांग के व्यापारी और चीन की नौकरशाही हमारा राष्ट्रीय शोषण कर रहे हैं।"[96]

किसी भी राष्ट्र की सरकार बुद्धिजीवियों से भयभीत रहती है। क्योंकि यही वर्ग जागृत रहकर राज्य व्यवस्था का सूक्ष्म अध्ययन, विश्लेषण एवं विरोध करता है। इस स्थिति का बयान वॉग अपने पत्रों के माध्यम से करता है। उसका तर्क यह भी है कि विश्व की दो महान शक्तियाँ रूस और अमरिका महाशक्ति के रूप में संपूर्ण

विश्व पर अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए प्रयत्न करती रहती है। परंतु उनकी स्पर्धा में चीन भी है। आइवी का भी यही मानना है कि चीन अपनी समस्या सुलझाने में समर्थ है। चीन को किसी के आधार की आवश्यकता नहीं है। आइवी की व्यथा यह है कि अमरिका के प्रभाव के कारण चीन में भ्रष्टाचार घूसखोरी और राष्ट्र विरोधी काम पनप रहे हैं। गरीब मजदूरों का शोषण हो रहा है। चीन में कभी माओ और उसकी लाल किताब का महत्व था परंतु हांगकांग के व्यापारियों द्वारा राजनीतिक हस्तक्षेप के साथ भ्रष्टाचार व्याप्त हो गया है। चीन की तत्कालीन राजनीतिक स्थिति पर भाष्य करते हुए लीपेंग के शब्द है - "बढ़ती हुई अराजकता से देश खतरे में है, मुट्ठी भर लोगों के कारण क्या पूरे राष्ट्र की व्यवस्था को जोखिम में डाल दे? बाहरी शक्तियों की दखलअंदाजी हम नहीं सहन करेंगे।"[97]

प्रभा का स्पष्ट मत है कि चीन में छात्रों को भड़काने का काम हांगकांग के पूंजीवादियों ने किया और यह स्वाभाविक है कि कोई भी सत्ता अराजकता को बर्दाश्त नहीं करती। तब आइवी राजनीतिक सत्ता के खोखलेपन को व्यक्त करते हुए कहती है, "प्राफा ! तुम बार-बार सत्ता का हवाला क्यों दे रही हो? क्या करेगी सत्ता? मार डालेगी सबको? अरे, सत्ता तो एक फूला हुआ गुब्बारा है। जिससे जनता के फेफड़ो में हवा भरी होती है। इस गुब्बारे में सुई चुभा दो। बस हवा निकल जायेगी। "[98] वॉग एक जगह अपने पत्र में लिखता है, सत्ता वास्तव में डनलप की तकिया है। कितनी भी दबाओ, कितनी भी चिकोटी काटो वह वापस पूर्वाकार में आ जाती है।

राजनीति में विशेष रूचि न होते हुए भी प्रभा जी ने इस उपन्यास में चीन की राजनीति को बखूबी चित्रित किया है। वे कहती है, "मुझे राजनीति से चिढ़ है। राजनीति वह क्षेत्र है, जहाँ स्त्री, स्त्री नहीं रहती, पुरूष हो जाती है, मगर मुसीबत है कि राजनीति से बचकर कोई कैसे लिख सकता है? प्रतिबद्धता भी तो अनिवार्य है।"[99]

'एड्स' में प्रभा वर्तमान भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, राजनेता और बढ़ती महँगाई के चक्र का पर्दाफाश करती है। नेताओं के चाहने पर कैसे किसी वस्तु की कीमत बढ़ती और घटती है। इस बात को लेखिका ने स्पष्ट करते हुए कहा, "महंगाई

बढ़ती हुई महंगाई। घटता वही है जो हमारे नेता चाहते है।"[100] प्रभा ने देश की राजनीति के साथ-साथ विदेशी राजनीति पर भी प्रकाश डाला है। अमरिका जैविक अस्त्रों का बहाना बनाकर इराक पर आक्रमण कर सारी दुनिया में उथल-पुथल मचाना चाहता है। साथ ही इराक की तेल की बहती नदी पर अपना अधिकार जमाना चाहता है। अमरिका की इस चाल को प्रभा खेतान ने स्पष्ट किया है।

आतंकवाद एक भयानक राक्षस के समान है। अतएव कब- कहाँ, कौन इसका शिकार हो जायेगा यह कहा नहीं जा सकता। 'एड्स' उपन्यास की नायिका प्रभा विदेश में विमान यात्रियों की चेकिंग का अनुभव लेकर सोचती है कि वहाँ भी आतंकवादियों का भय है। प्लेन हाईजैक होने की संभावना रहती है। आतंकवादियों के कारण लोग मारे जाते है। यह स्थिति भारत में भी है। प्रभा को अपने देश की 1990 की स्थिति का स्मरण हो आता है। आतंकवाद दूषित राजनीति का ही परिणाम है। जिससे हिंसा भड़कती है। निरपराध लोगों के प्राण जाते हैं।

वर्तमान राजनीति में नेतागण अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए आंदोलन और युद्ध करवाते है। भारत में आयोध्या मंदीर के प्रश्न पर ऐसी ही स्थिति उत्पन्न होती है। परिणाम स्वरूप राष्ट्र का अहित एवं नुकसान होता है। प्रभा सोचती है, "यद्यपि 11 मार्च 1990 का खाड़ी युद्ध समाप्ति पर था। तब चर्चा यह होने लगी की कितने लोग मारे गये? कितना नुकसान हुआ? नेपम बनाने वालों ने पहले उसे बेचा फिर उसका प्रयोग सिखाया तत्पश्चात स्वयं ने ही नेपम बरसाया। इन सब भयावह परिस्थितियों से नायिका दुखी होती है। वह टी. वी. पर देखती है कि एक इराकी माँ के हाथ में घायल बच्चा है। बंकर के भीतर हजारों औरतें, बच्चों की लाशें, रेाते हुए पुरूष! यह आतंक, अत्याचार कौन करवाता है? साधारण सिपाही मरता है और विशिष्ट पुरूष सत्ता का प्रतीक बनकर दुनिया की सुर्खियों में चमकता है। चाहे बुश हो या सद्दाम, अपने-अपने देश की जनता के भाग्य-विधाता ये लोग है। इनकी अमरावती का सिंहासन कभी खाली नहीं हो सकता कभी नही। लड़ते रहेंगे --- गोले बारूद बरसते रहेंगे। लड़ाई पहले पारंपारिक थी। फिर परंपरा के विकास में एक और कड़ी की तरह जुड़ गयी।"[101]

राजनीति में लोकशाही को महत्व दिया जाता है, लेकिन भारत में चुनाव की राजनीति की बर्बरता दिखाई देती है। इरीना प्रभा को बताती है, "पश्चिम से बाहर पूर्वी यूरोप तथा मिडल ईस्ट या कुछ और उससे आगे अभी तक डेमोक्रेसी यानी एक स्वस्थ डेमोक्रेसी नहीं विकसित हो पायी है। एक न एक प्रकार की तानाशाही रही है।चाहे दक्षिणपंथी की हो या फिर वामपंथी की। अब तुम अपने देश को ही देखो ना फिर से चुनाव की तैयारी।"[102] 'एड्स' यह उपन्यास आतंकवाद को अधिक मात्रा में चित्रित करता है। 'अपने-अपने चेहरे' की रमा के माध्यम से हमें प्रभा जी के साम्यवादी विचारों के दर्शन होते हैं। रमा बहुत बार ध्यान से ऑफिस के किसी क्लर्क का चेहरा देखती हैं तब उसे लगता ''यह भी महंगीवाली सफारी सूट पहने, हाथ में गोल्ड रिस्ट वॉच हो, सोने की कलम हो, पैरों में महंगे जूते हो तो अच्छा लगेगा।"[103]

स्वतंत्रता पूर्व एक ओर ब्रिटीश साम्राज्य था, तो दूसरी ओर राजेशाही थी। फलस्वरूप प्रजा दो पाटों के बीच फंसी हुई थी। अंग्रेज और ये राजे-राजवाड़े अपने ऐश्वर्य वैभव में इतने लिप्त थे कि व्यापारियों से धन की माँग करते थे। इस स्थिति को 'पीली आंधी' में पीतसराजी स्पष्ट करते है, ''अपने तो दोहरी गुलामी झेल रहे हैं। एक ओर तो ये अंग्रेज सरकार और दूसरी और ये बिगड़े रईस, राजा-राजवाड़ों के बेटे। न इनमें शिक्षा की रूचि, न राज-काज की, संस्कृति, सिर्फ शराब पीना और उद्धत भाव से कामुक जीवन बिताना ही इनके जीवन का सार है।''[104]

उस युग में प्रजा राजा के प्रति समर्पित रहती थी। फिर भी राजा द्वारा प्रजा का शोषण होता रहा। उन्हें राजसत्ता का नशा था। राजनीति की नींव व्यापारियों पर निर्भर थी। राजा गंगा सिंह को ब्रिटीश सरकार से संरक्षण प्राप्त था। लेकिन कलकत्ता में स्थिति इसके विरूद्ध थी। लोग खुल्लम खुल्ला सुराजियों का साथ देते थे। लेकिन लालाजी किशन को बनिये की नीति समझाते हुए इन झमेलों से दूर रहने की सलाह देते है।

राजनीति भयंकर और विद्रुप होती है। सहसा इस कीचड़ में कोई फँसना नहीं चाहता। सेठ जी यही बातें किशन को समझाते है। छोटे माधो के मन में सुराजियों के और गांधीजी के बारे में सवाल उठ खड़े होते हैं। तब शीलबाबू उसे इन सबकी

जानकारी देते है। माधो के मन में शंका उपस्थित होती है, कि गांधीजी एक महात्मा है तो शील बाबू उनकी बुराई क्यों करते हैं? वे तो कहते थे, हमें अपनी आजादी छीन कर लेनी होगी, हिंसा की बात से माधो का हृदय कांप जाता। नाथूराम का कहना है कि अंग्रेजी राज के कारण बनियों ने पैसा कमाया। उधर शील बाबू क्रांति करते हुए सत्ता को पलटने का प्रयास कर रहे थे।

स्वाधीनता संग्राम में बंगाल की स्त्रियों की भूमिका प्रमुख रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात इंदिरा जी के शासन काल में समाजवाद को अपनाया गया। इस वजह से राधाबाई समाजवाद को कोसती है। उनका मंतव्य है कि राज के सामने किसी का वश नहीं चलता इसलिए राज से दूर रहना चाहिए। न दोस्ती, न दुश्मनी। राज किसी का नहीं होता।

निष्कर्ष -

राजनीतिक परिवेश और उससे जुड़ी समस्याएँ प्रभा जी के उपन्यासों में यथार्थ रूप में चित्रित हुई है। प्रभा जी ने अपने 'आओ पेपे, घर चलें' में श्वेत-अश्वेत की भयंकर राजनीति का वर्णन किया है। 'तालाबंदी' में पूँजीवाद के विरोध में सर्वहारा वर्ग के संघर्ष का वर्णन है। 'अग्निसंभवा' उपन्यास द्वारा सत्ता का घिनौना चेहरा समाज के सामने पेश किया गया है। 'एड्स' उपन्यास में आतंकवाद और उससे निर्मित समस्याओं को उजागर किया गया है। 'पीली आंधी' में स्वतंत्रता पूर्व की राजनीति का वर्णन है। प्रभा जी के राजनीतिक विचारों को उषा कीर्ति राणावत ने इस प्रकार देखा है, "प्रभा जी ने राष्ट्रीय आंतरराष्ट्रीय स्तर पर चलनेवाली राजनीति को अपने कथ्य में विश्लेषित कर युद्ध की विभीषिका हिंदू-मुस्लिम संघर्ष, सत्ता परिवर्तन इत्यादि सामाजिक विषयों का विवेचन संजीदगी के साथ किया है।"[105] प्रभा जी के 'छिन्नमस्ता', 'अपने-अपने चेहरे' और 'स्त्री-पक्ष' उपन्यास पारिवारिक जीवन के परिवेश पर लिखे गये है। इसलिए उनमें राजनैतिक परिवेश एवं समस्याएँ नहीं पायी जाती। प्रभा खेतान ने देश और विदेश की राजनीति का यथार्थ वर्णन किया है।

उपर्युक्त विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि युग विशेष का अपने सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक परिवेश से

घनिष्ठ संबंध रहता है। प्रभा खेतान ने अपने उपन्यासों में समसामायिक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक परिवेश और उनसे संबध्द समस्याओं का विस्तारपूर्वक विवेचन किया है। वे यथार्थवादी विचारधारा की प्रबल समर्थक, प्रगतिशील लेखिका है।

संदर्भसूची-

1. आओ पेपे घर चले,प्रभा खेतान, पृ. 16
2. वही, पृ. 36
3. वही, पृ. 36
4. वही, पृ. 62
5. वही, पृ. 100
6. वही, पृ. 104
7. वही, पृ. 109
8. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ. 56
9. वही, पृ. 56
10. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, 'हंस' पत्रिका, मार्च 1992, पहली किश्त पृ. 6
11. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, 'हंस' पत्रिका, अप्रैल 1992, दूसरी किश्त पृ. 52
12. एड्स, प्रभा खेतान, 'आज' पूजा वार्षिकांक पृ. 76
13. वही, पृ. 68
14. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ. 141
15. वही, पृ. 167
16. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी, डॉ. अशोक मराठे, पृ. 145
17. समकालीन हिंदी साहित्य विविध विमर्श, संपादक श्रीराम शर्मा, पृ. 137
18. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ. 20
19. पीली आंधी , प्रभा खेतान, पृ. 23-24
20. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी, डॉ. अशोक मराठे, पृ. 75
21. स्त्री-पक्ष, प्रभा खेतान, जनसत्ता सबरंग, 4 जुलाई 1999,21 वी कड़ी पृ. 20
22. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी, डॉ. अशोक मराठे, पृ. 71
23. वही, पृ-71

24. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, 'हंस' पत्रिका, अप्रैल 1992, दूसरी किश्त पृ. 58
25. वही, पृ. 51
26. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, 'हंस' पत्रिका, मार्च 1992, पहली किश्त पृ. 63
27. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी, डॉ. अशोक मराठे, पृ. 76
28. वही, पृ. 77
29. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी, डॉ. अशोक मराठे, पृ. 77
30. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ. 159
31. वही, पृ. 185
32. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी, डॉ. अशोक मराठे, पृ. 70
33. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ. 189
34. वही, पृ. 126
35. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ. 33
36. वही, पृ. 91
37. वही, पृ. 96
38. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी, डॉ. अशोक मराठे, पृ. 75
39. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ. 83
40. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी,डॉ. अशोक मराठे, पृ. 77
41. अपने-अपने चेहरे,प्रभा खेतान, पृ. 18
42. वही, पृ. 38-39
43. पीली आंधी, प्रभा खेतान, पृ. 19
44. वही, पृ. 74
45. वही, पृ. 240-241
46. स्त्री-पक्ष, प्रभा खेतान, जनसत्ता सबरंग, 14 मार्च 1999, 6 वी कड़ी पृ. 21

47. स्त्री-पक्ष, प्रभा खेतान, जनसत्ता सबरंग, 30 मई 1999,16 वी कड़ी पृ. 24
48. स्त्री-पक्ष, प्रभा खेतान, जनसत्ता सबरंग, 27 जून 1999, 20 वी कड़ी पृ. 18
49. स्त्री-पक्ष, प्रभा खेतान, जनसत्ता सबरंग, 27 जून 1999, 20 वी कड़ी पृ. 20
50. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी, डॉ. अशोक मराठे, पृ. 73
51. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ. 23-24
52. वही, पृ. 28
53. वही, पृ. 69
54. एड्स, प्रभा खेतान, आज पूजा वार्षिकांक पृ. 68
55. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ. 113
56. वही, पृ. 83
57. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ. 18
58. स्त्री-पक्ष,प्रभा खेतान, जनसत्ता सबरंग, 6 जुन 1999, सत्रहवीं कड़ी पृ. 23
59. वही, पृ. 23
60. वही, पृ. 23
61. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, डॉ. कामिनी तिवारी, पृ. 229
62. आओ पेपे, घर चलें, प्रभा खेतान, पृ. 82
63. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ. 23
64. वही, पृ. 80
65. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, 'हंस' पत्रिका, मार्च 1992, पहली किश्त पृ. 57
66. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ. 23
67. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ. 10
68. पीली आंधी , प्रभा खेतान, पृ. 269-270

69. स्त्री-पक्ष, प्रभा खेतान, जनसत्ता सबरंग, 7 मार्च 1999, पांचवीं कड़ी पृ. 20
70. आओ पेपे, घर चलें, प्रभा खेतान, पृ. 68
71. वही, पृ. 74
72. वही, पृ. 81
73. वही, पृ. 81
74. वही, पृ. 130
75. वही, पृ. 147
76. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, 'हंस' पत्रिका, अप्रैल 1992, दूसरी किश्त पृ. 51
77. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, अंतिम किश्त मई 1992, पृ. 60
78. एड्स, प्रभा खेतान, आज पूजा वार्षिकांक पृ. 67
79. वही, पृ. 70
80. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ. 20
81. हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार, डॉ. एम. वेंकटेश्वर, पृ. 102
82. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृ. 173
83. वही, पृ. 108
84. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ. 19
85. वही, पृ. 186
86. पीली आंधी , प्रभा खेतान, पृ. 242
87. स्त्री-पक्ष, प्रभा खेतान, जनसत्ता सबरंग, 7 मार्च 1999, छठी कड़ी पृ. 21
88. आओ पेपे, घर चलें, प्रभा खेतान, पृ.139
89. वही, पृ. 88
90. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ. 25
91. वही, पृ. 38
92. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी, डॉ. अशोक मराठे, पृ. 79

93. तालाबंदी, प्रभा खेतान, पृ. 44

94. वही, पृ. 15

95. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, 'हंस' पत्रिका, अप्रैल 1992, अंतिम किश्त पृ. 58

96. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, 'हंस' पत्रिका, मार्च 1991, पहली किश्त पृ. 57

97. अग्निसंभवा, प्रभा खेतान, 'हंस' पत्रिका, अप्रैल 1992, अंतिम किश्त पृ. 58

98. वही, पृ. 58

99. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श, डॉ. कामिनी तिवारी, पृ. 252

100. एड्स, प्रभा खेतान, 'आज' पूजा वार्षिकांक पृ. 81

101. वही, पृ. 66

102. वही, पृ. 76

103. अपने-अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ. 83

104. पीली आंधी, प्रभा खेतान, पृ. 12

105. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी, डॉ. अशोक मराठे, पृ. 83